आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 23 | उदयपुर शुक्रवार 15 दिसम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पाण्डुलिपि पर सर्वोच्च पुरस्कार

यह बात तब की है जब डॉ. प्रकाश 'आतुर' राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष थे। उन्होंने अकादमी का सर्वोच्च मीरां पुरस्कार नन्द चतुर्वेदी लिखित पाण्डुलिपि 'शब्द संसार की यायावरी' पर घोषित किया। यह पुरस्कार दस हजार रूपये का था। घोषणा होते ही साहित्यिक हल्के में कानाफूंसी शुरू हो गई। किसी ने कहा, नन्दजी मुख्यत: कवि हैं। अच्छा होता उन्हें किसी कविता-पुस्तक पर यह पुरस्कार दिया जाता।

इस बीच डॉ. नवलकिशोर ने एक नया तराना छेड़ा कि पाण्डुलिपि में एक लेख उनके ओर नन्दजी के संयुक्त नाम से लिखा गया था जो बिन्दु में प्रकाशित हुआ, उसे भी सम्मिलित कर लिया गया है। नन्दबाबू को जब यह सूचना दी गई तो वे बोले कि ऐसा अनजान में ही हो गया है जो गलत ही हुआ है, सींगड़ा भी जड़ देता है, कहावत है सो नन्दजी इस बतंगड़ से बड़े आहत ही हुए।

मैं अकादमी की सरस्वती सभा का राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य था। बैठक में मैंने प्रस्ताव रखा कि भविष्य में अकादमी द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार किसी पाण्डुलिपि पर नहीं दिया जाकर प्रकाशित कृति पर दिया जाना चाहिये तथा निर्णायक मण्डल के सदस्यों की घोषणा भी की जानी चाहिये ताकि किसी को किसी प्रकार का संशय न रहे। मुझे अच्छा लगा कि मेरा यह प्रस्ताव तत्काल ही सबकी स्वीकृति पा गया।

लेकिन डॉ. नवलकिशोर वाली बात नन्दजी को खटकती रही कारण यह भी था कि जिस बिन्दु नामक पत्रिका का नन्दजी प्रकाशन कर रहे थे उसके साथ वे अकेले ही नहीं, डॉ. आतुर, स्वयं डॉ. नवल तथा नेमनारायण जोशी भी जुड़े हुए थे।

नन्दजी से मेरा सम्बंध साहित्यिक तथा राजनीतिक उठापटक से सदा दूर रहा। यह सम्बंध उनसे अन्त तक बना रहा। जिस दिन (25 दिसम्बर, 2014) उनका निधन हुआ, दिन को उन्होंने फोन पर मुझसे याराना बात ही नहीं की, उसी वक्त ताजा लिखी कविता भी सुनाई थी।

एक दिन मैंने उनसे कहा कि अच्छा होता, आपसी बातचीत का सौहार्द्र होता लेकिन जो हुआ सो हुआ, उसे भूलिये। अब तो जो पाण्डुलिपि पुरस्कृत की गई, उसकी जानकारी साहित्यिकों को सुलभ कराना मुझे ज्यादा संगत लग रहा है। यह बहुत सारी गलतफहमियों का निराकरण करने की सार्थक पहल होगी। मैंने एक आलेख तैयार कर दिनमान को प्रकाशनार्थ भेज दिया। बहुत जल्दी ही वह दिनमान के 06 अक्टूबर 1984 के अंक में प्रकाशित हुआ। इस लेख के प्रारम्भ में सम्पादकीय टिप्पणी भी दी गई थी। यहां उस टिप्पणी सहित वह आलेख साभार प्रकाशित किया जा रहा है जो कई दृष्टियों से आज भी सर्वथा प्रासंगिक, महत्वपूर्ण तथा लेखन-मूल्यों का दस्तावेज बना हुआ है।

'मेरे आलोचक को कम लोग जान सकें' - नंद चतुर्वेदी

हिन्दी और राजस्थानी भाषा में समान रूप से प्रतिष्ठित वरिष्ठ कवि नन्द चतुर्वेदी को हाल ही में राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार' (दस हजार रूपये) प्राप्त हुआ है। उल्लेखनीय है कि यह पुरस्कार उनको कविता पर नहीं वरन् उनकी आलोचनात्मक कृति 'शब्द संसार की यायावरी' पर मिला है। उनकी यह कृति क्योंकि अभी अप्रकाशित है इसलिए हम यहां पुस्तक की समीक्षा के बजाय इस पुस्तक के बारे में उसके लेखक का नजरिया पेश कर रहे हैं। पुस्तक पर उनके विचार डॉ. महेन्द्र भानावत के साथ हुई उनकी बातचीत के आधार पर प्रस्तुत है।

अभी तक हम आलोचना अथवा समीक्षा लिखने की जिम्मेदारी विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की ही समझते रहे। इसलिए उन्होंने जिस तरह की पाठ्यक्रमीय समीक्षा लिखी उसे हमने समीक्षा मान लिया क्योंकि मैं इस तरह की समीक्षा से दूर रहा इसलिए शास्त्रीय शब्दावली में समीक्षक नहीं हो सका किन्तु **साहित्य के प्रश्नों का उत्तर देना, उन पर बहस करना उन पर राय व्यक्त करना मेरे कवि कर्म का एक हिस्सा रहा है। अपने साहित्यिक उन्मेष को गद्य और पद्य दोनों में ही मैं समान रूप से व्यक्त कर पाया हूं। एक की पहचान बना पाया और दूसरे गद्य-कर्मी को अपेक्षाकृत कम लोग जान सके।**

'शब्द संसार की यायावरी' में मैंने प्रारंभिक आलेख साहित्यिक कर्म के कारणों की जांच करते हुए लिखे हैं। **मेरी दृष्टि से साहित्य की स्वायत्तता और सापेक्षता को विकट बहस का मुद्दा नहीं बनाया जा सकता। यह किसी भी लेखक की बुनियादी जरूरत होगी कि वह अपने लेखन को सामयिक राजनीति का हिस्सा होने से बचाये। सर्जनात्मक ऊर्जा और राजनैतिक ऊर्जाओं के स्वभाव बहुत भिन्न-भिन्न हैं।**

राजनीति लकीरों, रूढ़ियों और संकीर्णताओं को बढ़ाती है। साहित्य उन्हें कहीं न कहीं काटता है। साहित्य स्वाधीनता का एक पक्ष है। जब कभी उसे स्वाधीनता से विमुख किया जायेगा वह कभी न हिलने वाले समय का मृत हिस्सा होगा।

मेरी किताब का एक बड़ा हिस्सा राजस्थान की समकालीन कविता और कवियों पर है। **मेरे मत में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' हिन्दी के अनेक महत्वपूर्ण रचनाधर्मियों का उल्लेख नहीं करता और प्रांतों की साहित्य जिजीविषा को रेखांकित करने का काम भी नहीं करता है। इस तरह वह सिर्फ साहित्य की केन्द्रीय प्रवृत्तियों और केन्द्रीय व्यक्तियों तक ही सीमित रह जाता है। साहित्य इतिहास का इस तरह सीमित और केन्द्रित होना द्वेष-बुद्धि उत्पन्न करता है।**

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का यह संकुचित वृत्त तोड़ा जाना चाहिये। यदि नहीं तोड़ा गया तो आज नहीं तो कल प्रांतों में अपने-अपने साहित्य कर्म की अलग-अलग हैसियत की मांग होने लगेगी। मैंने ये आलेख प्रांतीय रचना कर्म की हैसियत देने की दृष्टि से लिखे हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम साहित्य-इतिहास को किसी एक प्रदेश का नहीं बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश का इतिहास बनायें।

इसमें एक अध्याय 'राजस्थान की हिन्दी कविता के प्रतिमान' शीर्षक से है जिसमें विभिन्न राज्यों के एक हो जाने के उपरान्त राजस्थान के साहित्योन्मेष का सिलसिलेवार ब्यौरा है। कन्हैयालाल सेठिया, गुलेरीजी और हरीश भादानी की रचनाधर्मिता पर भी मैंने इसमें लेख लिखे हैं।

इस कृति का यह नाम मैंने इसलिए दिया कि **गद्य लेखन के सिलसिले में मैंने यायावरी ही की है। किसी खास विधा को छोड़कर आज का लेखक यायावरी ही कर सकता है।** यायावरी एक प्रसन्न-कर्म है। न तो पूर्व नियोजित और न विवशतापूर्ण ; चलते-चलते जहां विराम आ जाये।

-प्रस्तुति डॉ. महेन्द्र भानावत

बालमन का प्रथम संस्कार 'पट्टी पूजन'

- डॉ. मालती शर्मा -

'पट्टी पूजन' बालक को लिखना सिखाने का, अक्षरों को लिखने का अभ्यास कराने का लोक परम्परित संस्कार है जो विद्या और कलाओं की देवी सरस्वती की बसंत पंचमी और ज्ञान देने वाले गुरु की पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा को बच्चे के तीसरे, पांचवें, सातवें वर्ष में भी कराया जाता है। यों आवश्यक होने पर किसी और भी पर्व-तिथि पर यह संस्कार हो सकता है, पर बसंत पंचमी सबसे उपयुक्त है। यह बच्चे को सभी विद्याएं-कलाएं देने वाली तिथि मानी जाती है।

'पट्टी पूजन' के संस्कार में बसंत पंचमी को बच्चे को नहला-धुलाकर नए पीले वस्त्र पहनाए जाते हैं। गांव के पंडित आंगन में चौक पूरकर चौकी पर पट्टी रखते हैं। उस पर ऊपर या बीच में स्वस्तिक बना रोली, अक्षत, फलों से पट्टी की पूजा कराते हैं। फिर बच्चे का हाथ पकड़कर उससे 'ऊँ नम: सिद्धम्' या 'श्री गणेशाय नम:' लिखवाते हैं।

बालक को टीका लगाकर फूल-माला पहनाई जाती है। पेड़े या लड्डू का प्रसाद रहता है। पट्टी पूजने के बाद बच्चा सबको प्रणाम करता है। पंडित को 'पट्टी पुजाई' इच्छानुसार दी जाती है। उस समय ग्राम्यलोक में अधिकांश लोगों के पढ़े-लिखे नहीं होने से यह संस्कार पंडित ही कराते थे। नगरों, शहरों में तो माताएं या घर का कोई भी वयोवृद्ध 'पट्टी पूजन' करा देता है।

'पट्टी पूजन' के पूज्य देवता अपने हाथों में वीणा-पुस्तक लिए विद्या और समस्त कलाओं की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती तथा हर कार्य के विघ्न विनाशक प्रथम पूज्य देवता गणेशजी हैं जो पौराणिक कथाओं और लोक किंवदंतियों के सन्दर्भ के अनुसार महर्षि वेदव्यास के रचे इतिहास-पुराणों के लेखक, उनके स्टेनोग्राफर थे और उन्होंने यह पद इस कड़ी शर्त के साथ स्वीकार किया था कि आप जब भी बोलना बन्द कर देंगे, मैं लिखना छोड़कर चला जाऊंगा। इसके साथ ही यह भी कथा लोक में प्रचलित है कि एक दिन गणेशजी आने की हड़बड़ी में अपनी कलम भूल आए। उन्होंने उसे अंब, जिसमें भी वे कलम रखते रहे, खोजा, वह वहां नहीं थी।

उधर व्यासजी ने बोलना शुरू कर दिया तो गणेशजी ने अपना दांत उखाड़ा और उसको कलम बना लिखना शुरू कर दिया, तब से वे 'एकदंत' हो गये।

ज्ञान प्राप्ति के शुभारंभ के उद्देश्य की दृष्टि से 'पट्टी पूजन' के संस्कार को वैदिक युग के वेदारंभ संस्कार से भी जोड़ सकते हैं पर तब वैदिक शिक्षा मौखिक थी। लिखित शिक्षा कब आई, ज्ञान का लेखन कब से शुरू हुआ, लोक परम्परा में उपर्युक्त सन्दर्भ के गणेशजी के लिखे जाने के सिवाय और कोई प्रमाण नहीं मिलता पर यह महाभारत युग को लिखने का ऐतिहासिक प्रमाण तो है ही। वेदारंभ संस्कार के साथ बसंत पंचमी के जुड़ने का एक क्षीण सा सूत्र है कि वेदाध्ययन करने वाले ब्रह्मचारी को वसंत में लाल फूलों से फलते वृक्ष पलाश का डंडा दिया जाता था।

'पट्टी पूजन' की पट्टी में भी कई बदलाव देखे हैं। किसी समय 'पट्टी पूजन' में बच्चे के लिए नई पट्टी, जो लकड़ी की होती थी, मिट्टी की छोटी कुल्हड़ी, बुदका, जिसमें लिखने के लिए घुली खड़िया भरी होती थी और सरकंडे या नरसल की बनी कलम, इन्हें लेकर बच्चा गांव की पाठशाला में जाता था।

पश्चिमी-उत्तर भारत के गांवों में नए विद्यार्थी का 'पट्टी पूजन' पाठशाला के पंडितजी ही करा देते थे। अभिभावक पंडितजी को दक्षिणा देकर बच्चों में बताशे बंटवा देते थे। खड़िया से लिखी इबारत और पहाड़े वगैरह धोकर पट्टी सुखाई जाती थी और उसे सुखाते हुए बालक 'सूख-सूख पट्टी चंदन गट्टी' गाते थे।

इस पट्टी के बाद आई स्लेट-बत्ती और अब कॉपी, पेंसिल, पेन हैं। यहां 'पट्टी पूजन' में लिखा गया 'ऊँ नम: सिद्धम्' लोकजीवन में किसी की पढ़ाई-लिखाई पूछने पर उसके उत्तर का मुहावरा 'ओना मासी धम / बाप पढ़े न हम' बन गया है।

-शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (42) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पीरजी की सेवा में श्यामजी बोकड़िया

मनुष्य बीमारी का घर कहा जाता है। बीमारियां भी कई तरह की होती हैं। कई बार डॉक्टर भी उन्हें नहीं पकड़ सकते। कई बार ऐसा भी होता है जब डॉक्टर व्यक्ति को पूर्णत: स्वस्थ बताता है किन्तु वह स्वस्थ होता नहीं। कई समस्याएं भी बीमारी का रूप लिए होती हैं तब डॉक्टर के अलावा समझेबुझे व्यक्तियों की सहायता ली जाती है। उन्हें इश्वरीय प्रेरणा होती है। कोई अदृश्य शक्ति उनसे इलाज करवाती है। कई बार वह शक्ति स्वयं उसके शरीर में प्रवेश कर अपनी उपस्थिति से हर प्रकार की समस्या और बीमारी का शमन करती है। ऐसी शक्तियों के देवी-देवताओं के निश्चित स्थान होते हैं। निश्चित दिन होते हैं जहां उनकी शरण में लोग पहुंचते हैं। ऐसे स्थल गांवों और शहरों में भी मिलते हैं।

उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर देबारी-गुड़ली मार्ग पर विजनवास गांव में श्यामजी बोकड़िया (50) पीरजी के बड़े भक्त हैं जो गत 30 वर्ष से लोगों की हर प्रकार की बीमारी और समस्या का निदान बताते आ रहे हैं। पहलीबार 4 मई 2003 को राजेन्द्र वीरानी के साथ विजनवास जाकर उनके घर पर बोकड़ियाजी के शरीर में पीरजी की छवि के दर्शन किये। आसपास के तथा दूर-सुदूर के सामान्य से लेकर विशिष्ट लोगों का आना-जाना निरन्तर बना रहा। शुक्रवार को सर्वाधिक लोगों का आना-जाना होता है। यही इनका मुख्य दिन होता है जब प्रात: 7 बजे से रात्रि 10-11 तक बज जाती है। कोई निराश नहीं लौटता।

पीरजी की सेवा की शुरूआत की बड़ी दिलचस्प घटना सुनाते हुए बोकड़ियाजी ने बताया कि एक दिन वे अपनी साइकिल पर खेमली रेलवे स्टेशन से विजनवास आ रह थे तब रेलवे क्रोसिंग के वहां आंबड़ के पेड़ के नीचे एक रोता हुआ नग्न बालक मिला जो दिखने में बड़ा ही खूबसूरत था।

उन्होंने उसे अकेला पाकर उठाने की चेष्टा की। इतने में दूर एक स्त्री दिखाई दी जिसने बताया कि यह बच्चा मेरा है। उन्होंने पूछा कि इसे यहां क्यों छोड़ रखा है तो वह बोली कि यह वजन में बहुत भारी है। बोकड़ियाजी ने उसे उठाया। एक हाथ में बच्चा और दूसरे में साइकिल। बरसात के दिन। ज्यों-ज्यों वे चलने लगे, वह बच्चा वजनी बनने लगा। साइकिल भी भारी हो गई जिससे उसको चलाना मुश्किल हो गया।

थोड़ी दूर चले कि वे थककर पसीना-पसीना हो गये। उन्हें चक्कर आने लगे और वे बेहोश हो गिर पड़े। कुछ देर बाद उन्होंने आंखें खोली। धीरे से उठे। बच्चे को साइकिल पर सुलाया।। सामने उन्हें पांच औरतें आती मिलीं। वे बड़ी तुरतीफुरती से साइकिल को धक्का मारने लगीं। यह धक्का इतनी जोर का था कि बोकड़ियाजी चलते-चलते नीचे जा गिरे। देखा तो वे औरतें और बच्चा सभी गायब थे।

इतने में जोगी-जोगिन पहाड़ी से उतरते दिखाई दिये। जोगी के गले में सर्प लिपटा था। साइकिल के पास आकर जोगिन ने अपनी तूम्बी में से पानी का छींटा दिया जिससे बोकड़ियाजी उठ बैठे। उसने कहा- चन्देसरा (विजनवास के पास का गांव) तक हम साथ हैं, तुम भय मत खाना। बोकड़ियाजी ने साइकिल पकड़ी। कोई 20 पांवड़े चले होंगे कि दोनों अदृश्य हो गये। उसी समय जोर की पटाखों की आवाज हुई। एक बूढ़ी औरत दिखाई दी जो काले कपड़े पहने थी। वह बड़ा वीभत्स रूप लिये थी। उसके पांव का आगे का हिस्सा पीछे की ओर था। उसने एक मरी हुई औरत को साइकिल पर बिठाई। एक किलोमीटर तक साइकिल बिना पेडल दिये चलती रही। अन्त में एक पीरजी के स्थान पर जाकर रूकी।

मरी हुई औरत जीवित हो गई। बोकड़ियाजी को 'प्यास लगी होगी' कहकर वह साइकिल से उतरी और बाड़ कूद पीतल के गिलास में हरा कांजीवाला पानी लेकर आई। बोली- 'ले पानी पी ले, ठीक हो जायेगा।' बोकड़ियाजी ने मन ही मन पीरजी का स्मरण कर कहा- 'मेरी जान को आफत आ गई है, मेरी रक्षा करो।' यह कहते ही एक श्वेत वस्त्रधारी सौम्य पुरुष की छवि उन्हें दिखाई दी। उसने उस औरत के लट्ठ मारे जिससे वह भागती बनी।

बोकड़ियाजी यह दृश्य देखकर घर पहुंचे और तीन दिन तक बेहोश पड़े रहे। होश आने पर वे पीर बावजी के स्थान पर गये। इस तरह पांच वर्ष तक वे उनकी सेवा-पूजा में लोबान-अगरबत्ती करते रहे। उन्हीं दिनों ये बुरी बीमार हुए। डॉक्टरों ने कैंसर बताया तब ये मुम्बई टाटा हॉस्पिटल ले जाये गये। सवा लाख रुपया खर्च हुआ। डॉक्टरों ने छुट्टी दे दी किन्तु ये पूर्वत: स्वस्थ नहीं हो सके जबकि डॉक्टर इन्हें स्वस्थ मानते रहे। सीने में जलन होती रही। बीस किलो वजन कम हो गया।

वहां ये अपनी बहिन के घर रहते थे। एक दिन इन्हें जोर का गुस्सा आया। इन पर रखी बर्फ की शिला हटी और ये स्वस्थ हो गये। वजन भी पूर्ववत हो गया। ये अपने घर चले आये लेकिन बीमार हो गये। डॉक्टरों ने पहले वाली बीमारी बताई। फिर मुम्बई ले गये। अत्यधिक परेशान होने पर पीरजी की शरण पकड़ी। उन्होंने कहा- 'लोबान-अगरबत्ती करते रहना, ठीक हो जायेगा।' उसके बाद बोकड़ियाजी कभी अस्वस्थ नहीं रहे अपितु पीरजी की कृपा से अस्वस्थ लोगों के दुखदर्द ही दूर करते रहे। यह क्रम आज भी अनवरत जारी है।

ये पीर कोई इस्माइल नामधारी हैं जिन्हें चन्देसरा का एक ब्राह्मण मुम्बई से लाया और अपने खेत में बिठाया। इस बात को लगभग 40 वर्ष हो गये हैं। यहां सर्वाधिक ब्राह्मणों की बस्ती है। एक भी घर मुसलमान का नहीं है।

एक समय बोकड़ियाजी की दृष्टि कम हो गई तब पीरजी ने उन्हें एक लोहे की डिबिया दी। कहा- 'इसमें देखने से हर तरह की बीमारी का पता लग जायेगा तद्नुसार तुम लोगों का इलाज करते रहना।' तब से बोकड़ियाजी उस डिबिया के सहारे बीमारी अथवा समस्या का पता लगाकर तद्नुसार समाधान बताते हैं।

इलाज के दौरान वे कागज पर उर्दू में यंत्र बनाकर देते हैं। लोबान-अगरबत्ती की धूप देने को कहते हैं। नींबू पर पेन से लेखकर देते हैं। भभूत देते हैं। मंत्रित धागा देते हैं। शारीरिक-मानसिक बीमारी के अलावा भूत-प्रेत, फंद-फांदा, डाकिन-चुड़ैल, कामण-मूठ, नजर-फजर अथवा पूरवज दोष जैसी बीमारियों का इलाज करते हैं जिनके लिए अस्पतालों में कोई इलाज नहीं होता।

उदयपुर में रह रहे बोकड़ियाजी के खास भक्त लाडनूं निवासी प्रदीप फूलफगर ने बताया कि सरदारशहर में आचार्य महाप्रज्ञ पर किसी ने मूठ चलवा दी जिसका पूर्वाभास होने पर करणीदान सेठिया (95) ने यंत्र बनाकर दिया जिससे स्थान परिवर्तित कर दिया। नतीजा यह हुआ कि महाप्रज्ञजी बच गये। समझेबुझे व्यक्ति लाये गये। डेढ़ वर्ष बाद बोकड़ियाजी को भी ले जाया गया। बोकड़ियाजी ने 30-40 साधु-श्रावकों की उपस्थिति में दिन को 4 बजे के बीच टीनशेड से एक पोटली निकलवाई जिसमें नींबू, आलपीन, रोलीमोली पुतला आदि मंत्रित किये हुए थे।

पीरजी की कृपा से बोकड़ियाजी ने सैकड़ों लोगों का इलाज किया है। कइयों को जीवनदान दिया है। विपन्न को समृद्धिपूर्ण बनाया है। जीवन से हारे, थके, निराश, निराश्रित को बल, संबंल, साहस, आश, विश्वास और आश्रय दिया है। वे कहते हैं - 'मैं तो मात्र माध्यम हूं। जिसका जहां इलाज होता हो, जो जिसमें आस्था रखता हो, मैं उस देवी-देवता की शरण और सान्निध्य बता देता हूं। जो पीरजी के प्रति आशान्वित होता है उसे कृपा का पुष्प नजर कर देता हूं।'

बालसाहित्य ज्ञान का बीजारोपण

बालसाहित्य का सृजन समय की आवश्यकता है। जिनके लिए यह लिखा जा रहा है उन तक इसे पहुँचना बहुत जरुरी है। मौजूदा समय बालसाहित्यकारों के लिए परीक्षा की घड़ी है। ये विचार बालसाहित्य की प्रमुख पत्रिका 'देवपुत्र' के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे ने व्यक्त किये। वे 'राजकुमार जैन राजन फाउण्डेशन' द्वारा 26 नवंबर को चित्तौड़गढ़ में आयोजित राष्ट्रीय बालसाहित्य सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

समारोह अध्यक्ष सांसद सी. पी. जोशी ने कहा कि चित्तौड़गढ़ दुनिया में छाया हुआ है। पूरी दुनिया हमारी संस्कृति की ओर भाग रही है और हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर जा रहे हैं जो चिंता का विषय है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ए. एल. जैन ने कहा कि राजकुमार जैन 'राजन' ने पूरे देश में बालसाहित्य की पुस्तकें नि:शुल्क भेंट कर पठन-पाठन की परम्परा को सम्बल दिया है। समारोह में गोविन्द शर्मा, जितेन्द्र निर्मोही तथा डॉ. कनक जैन ने बालसाहित्य को गांवों तक पहुंचाने एवं तदनुरूप सृजनकर परम्परागत शिक्षण पर बल दिया।

स्वागत उद्बोधन देते संयोजक राजकुमार जैन 'राजन' ने कहा कि बालसाहित्यकार 'देवदूत' हैं जो सृजन के माध्यम से बालकों में अनुराग बढ़ाने के साथ ही संस्कारों से पल्लवित करते हैं। उन्होंने भोपाल की साहित्य समीर दस्तक एवं नीमच की राष्ट्र समर्पण की सहभागिता से कीर्ति श्रीवास्तव एवं संजय शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रारंभ में सरस्वती वंदना नन्दकिशोर निर्झर ने की। प्रथम सत्र में पवन पहाड़िया की 'समझो मम्मा', 'ऐसी जोत जगाएं', प्रहलादसिंह झोरड़ा की 'चांद खिलौना', ईंजी. आशा शर्मा की 'अंकल प्याज', महावीर रंवाल्टा की 'अनोखा जन्मदिन', अब्दुल समद राही की 'चुनमुन-चुनमुन' तथा डॉ. शील कौशिक, सावित्री चौधरी, खेलनप्रसाद कैवर्त, नीता अग्रवाल, गुलाबचन्द पटेल आदि की पुस्तकें लोकर्पित की गईं। बाल प्रतिभा जयेश खटीक व अभिषेक मेहता ने कविताओं का पाठ किया। राजकुमार जैन 'राजन' ने नागौर के पवन पहाड़िया को 5500 व सतारा महाराष्ट्र के मछिन्द्र बापू भिसे को 4000 रुपये की बालसाहित्य की पुस्तकें नि:शुल्क भेंट कीं। बाल कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य करने वालों में 'डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति सम्मान' सलूम्बर की डॉ. विमला भण्डारी एवं अल्मोड़ा के उदय किरौला को, 'डॉ. श्रीप्रसाद स्मृति बाल साहित्य सम्मान' शाहजहांपुर के डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' एवं, डॉ. चन्द्रसिंह बीरकाली, 'राजस्थानी बाल साहित्य सम्मान' जयपुर की श्रीमती सावित्री चौधरी को सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरुप प्रत्येक को पाँच हजार एक सौ रुपये नगद, प्रशस्तिपत्र, अंग वस्त्र तथा बालसाहित्य प्रदान किया गया।

इसी तरह 'डॉ. बालशौरी रेड्डी स्मृति बालसाहित्य सम्मान' रतनगढ़ के ओमप्रकाश क्षत्रिय एवं पौढ़ी गढ़वाल उत्तरांचल के मनोहर चमोली 'मनु' को, 'श्री अंबालाल हिंगड़ स्मृति बालसाहित्य सम्मान' जोधपुर के डॉ. डी. डी. ओझा एवं गांधी नगर के गुलाबचंद पटेल को, 'श्रीमती इंदिरादेवी हिंगड़ स्मृति बालसाहित्य सम्मान' पटियाला की श्रीमती सुकीर्ति भटनागर एवं इन्दौर के प्रदीप मिश्र को, 'शांतिलाल हिंगड़ स्मृति राजस्थानी बालसाहित्य सम्मान' भोपाल के घनश्याम मैथिल 'अमृत' एवं रायपुर के डॉ. सत्यनारायण सत्य को, 'श्री जगदीश दुग्गड़ स्मृति बालसाहित्य सम्मान' गुड़गाँव के हरीशकुमार 'अमित' एवं बरेली के अरविन्दकुमार साहू को, 'श्री फतेहलाल चण्डालिया स्मृति बालसाहित्य सम्मान' झालावाड़ के शिवचरण सेन 'शिवा' एवं सोजत के अब्दुल समद राही को, 'चौधरी श्री मंगतराम कुलहरी स्मृति बालसाहित्य सम्मान' पटना के भगवतीप्रसाद द्विवेदी एवं दौसा के अंजीव अंजुम को, 'श्रीमती बरजीदेवी दूणा स्मृति बालसाहित्य सम्मान' जोधपुर की डॉ. जेबा रशीद एवं नैनीताल की श्रीमती विमला जोशी को एवं 'चौधरी खूमसिंह कड़वासरा स्मृति बालसाहित्य सम्मान' मथुरा के संतोषकुमार सिंह को प्रदान किया गया। सम्मान स्वरुप प्रत्येक को इक्कीस सौ रुपये नगद, प्रशस्तिपत्र, अंग वस्त्र एवं बालसाहित्य प्रदान किया गया। समारोह में डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. कुंजन आचार्य, अब्दल जब्बार, शकुंतला सरुपरिया, प्रमोद सनाढ्य, राजेश राज, बंशीलाल लड्डा ने वैचारिक भूमिका दी।

शतरंज के उस खेल में जब मैं घोड़ा बना

यह कोई 1956 की, बीकानेर की घटना है। मैं अपने अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत के साथ वहां अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन ग्रंथालय के परिसर में रहकर रामपुरिया जैन इन्टर कॉलेज में द्वितीय वर्ष का अध्ययन कर रहा था। भाई साहब डूंगर कॉलेज में पढ़ते थे। उनके अति घनिष्ट साथियों में मनमोहन बागड़ी, ओंकार पारीक और आत्माराम शर्मा थे। मेरे को भी ये उतने ही स्नेहिल रूप में छोटे भाई सा प्यार देते थे।

ओंकारजी तो भाई साहब की शादी में कानोड़ भी आये। बाद में वे स्थायी रूप से उदयपुर बस गये जिनसे अंतिम समय तक मेरा मिलना-जुलना होता रहा। वे जात-पांत के बंधनों से मुक्त रह ओंकारश्री बन गये। अपनी दमदार वाणी और दमखम लेखनी से वे जमाने को टीसते रहे। अपने जीवनकाल में वे जैसे हर समय संघर्षों और थपेड़ों से ही हाताहूती खेलते रहे।

बागड़ीजी बीकानेर छोड़ मुम्बई जा बसे जिनसे मेरा सम्बंध अभी भी पूर्ववत बना हुआ है। उन्होंने वहां बीकानेरी माहेश्वरी समाज की संस्था मनमोहन रासमंडल के माध्यम से बीकानेरी परम्परा से जुड़ी सांस्कृतिक गतिविधियां तथा कई स्थायी महत्व की प्रवृत्तियां चला रखी हैं। डांडिया खेल के साथ-साथ कुंवारी बीनणी, टीके री रात, तलाक-तलाक जैसे हास्य प्रधान नाटकों का लेखन-मंचन भी उन्होंने किया। वैवाहिक रीतिरिवाजों और मांगलिक गीतों से सरोबार 'सगाई से विदाई' पुस्तक और रासमंडल की रजत जयंती पर 'बीकानेरी व्यंजन सौरभ स्मारिका' भी प्रकाशित की। ये दोनों संग्रह उन्होंने मुझे भी भेजे। वरिष्ठ नागरिकों के लिए प्रोग्रेसिव सीनियर सिटीजन्स एसोसिएशन भी स्थापित की।

कहा जा सकता है कि बागड़ीजी को समाजसेवा और अपनों के लिए बहुत कुछ सार्थक कार्य करने की प्रेरणा विरासत में मिली। उनकी बड़ी बहिन रतनबाई दम्माणी ने बीकानेर में महिला जागृति की अगृणी के रूप में समाजसेवी संगठनों के माध्यम से कई काम किये। पिताश्री चांदरत्नजी बागड़ी ने तो अपने पुत्र भैरोंरतन की याद में भैरोंरतन मातृ पाठशाला का निर्माण किया जिसे मनमोहनजी आज तक संभाले हुए हैं जो अब सीनियर उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में शिक्षा समाज की अच्छी संस्था के रूप में पहचान लिये है।

बागड़ीजी जब भी हमसे मिलने आते, कुछ हटकर ऐसा कार्य करने का जिक्र करते जो लोगों से जुड़ा हुआ, उनका योगदान लिये हो और जिसकी लम्बे समय तक चर्चा होती रहे। ऐसा कार्य हो जो किसी की नकल नहीं लगे तथा जिसके लिए उन्हें नई राह और चाह से भी गुजरना पड़े।

बागड़ीजी ने बताया कि समाजसेवा के अलावा उन्हें शतरंज खेलने में गहरी रुचि थी। इतनी गहरी कि वे उसके पीछे अपनी कक्षा भी छोड़ देते। इस खेल में उन्होंने बीकानेर की चैम्पियनशिप भी जीती थी। डूंगर कॉलेज में पढ़ते बी. ए. में उन्होंने सस्कृत विषय लिया था। विभागाध्यक्ष प्रो. विद्याधर शास्त्री थे। इस कॉलेज में मैं भी पढ़ा। छात्रसंघ के अध्यक्ष मानिकचंद सुराणा थे। उन्होंने बड़े शान से कॉलेज की सिल्वर जुबली मनाई थी और उस अवसर पर निकलने वाले बुलेटीन का मैं सम्पादक बनाया गया था। तब ही लगा था कि सुराणाजी आगे जाकर प्रांत की राजनीति में अपनी कद्दावर कामयाबी से अपनी विशिष्ट पहचान बनायेंगे।

बागड़ीजी ने बताया कि संस्कृत-गुरुदेव का मेरे पर पूरा हाथ था। उन्होंने मुझे यह छूट दे रखी थी कि मैं संस्कृत के पीरियड में भी शतरंज खेल सकूंगा। एक दिन उन्होंने मुझे कक्षा में उपस्थित रहने का आदेश दिया सो मैं पिछली सीट पर जा बैठा ताकि कभी भी धीरे से खिसक जाऊं तभी उनका स्वर गूंजा- 'नालायक आगे आओ।' गुरुदेव के नालायक और दुष्ट ये दो शब्द मेरे लिए आशीर्वाद स्वरूप थे जो वे हर कहीं उच्चरित किये देते थे।

उस दिन गुरुदेव संस्कृत नाटक मृच्छ कटिकम् पढ़ा रहे थे। प्रसंग था नायक चारुदत्त अपनी प्रेयसी के साथ जो चौपड़ खेल रहा था उसमें गोटियों की जगह दासियां खड़ी की गई थीं। कक्षा के बाद उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि तुम शतरंज का कोई ऐसा खेल प्रस्तुत करो जिसमें मोहरों के स्थान पर विद्यार्थी हों।

बागड़ीजी के लिए गुरुदेव का यह आशिष सोने में सुहागा बना। वे तो स्वयं ही कुछ-न-कुछ नया अजूबा करने की फिराक में ही रहते थे। घर जाकर जब उन्होंने चर्चा की तो सभी ने उनका मनोबल ही नहीं बढ़ाया, उनके इस कार्य में हाथ बंटाने की भी जिम्मेदारी ली। इसके लिए बीकानेर का स्टेडियम लिया गया। ग्राउंड में शतरंज का बोर्ड बनाया गया। सफेद और काले चौकोर खाने तैयार किये गये। दोनों ओर दो माइक लगाये गये। एक माइक पर स्वयं बागड़ीजी और दूसरे पर उनके सहपाठी आत्माराम शर्मा ने इस खेल का संचालन किया।

बागड़ीजी ने बताया कि 64 खाने वाले इस खेल में दो पक्ष, आधे सफेद और आधे काले होते हैं। विशेष ध्यान यह रखा कि खेल की कद काठी के अनुरूप खिलाड़ियों का चयन किया गया अर्थात् हाथी के लिए मोटे, ऊंट के लिए लम्बे तथा घोड़े के लिए नाटे तथा अच्छी और आकर्षक पर्सनलिटी वालों को बादशाह तथा वजीर का रोल दिया गया।

हाथी, ऊंट और घोड़े के मुखौटे बनाये गये जो खेल के दौरान सम्बंधित खिलाड़ियों को पहनाये गये। प्यादों के लिए बड़े पापड़ बेलने पड़े। उनके लिए जो बच्चे तैयार किये गये वे रिहर्सल के लिए एक दिन आते तो दूसरे दिन नदारद लगते।

बड़े सोच-विचार के बाद तय रहा कि छोटे बच्चों को यदि कुछ लालच दिया जाय तो उनकी रुचि बनी रहेगी अत: उनके लिए एक-एक गोली लेमनचूस की दी गई जिससे उनकी उपस्थिति बराबर बनी रही और उन्होंने दिल लगाकर अपनी प्रस्तुति दी।

मुझे घोड़ा बनाया गया। बचपन से ही मेरा घोड़ों से सर्वाधिक परिचय और लगाव रहा। पिताश्री की मृत्यु के पश्चात मां के साथ तो कभी अकेले घोड़े पर बैठकर गांवड़े जाता जहां दादा-पिता वणज करते थे। एकबार घोड़े ने मुझे गिरा दिया तो दूसरी बार अड़ पकड़ने पर ऐसी जोर की कामड़ी ठोकी कि चुपचाप दो कोस की दूरी पार करा मुझे सुरक्षित घर पहुंचा दिया। दीवाली के दिनों में मां के साथ रात तीन बजे उठकर रावले की घुड़साल में घोड़ों की लीद लेने जाता जहां विविध रंगी काबरे, चितकबरे, सफेद, काले, भूरे हष्टपुष्ट घोड़े बंधे देखता। किसी घोड़े का पीछे का एक तो किसी के दोनों पांव रस्सी से बंधे रहते।

गर्मियों की छुट्टियों में कई तरह के खेलों में घोड़ा चढ़ दड़ी खेलने का खेल खेलते। कभी मैं घोड़ा बनता तो सवार कोई और होता। कभी मैं सवार होता तो घोड़ा कोई और बनता। अकेले में तालाब पर स्नान करने जाता तो बीच रास्ते में घोड़ा बन विविध चालों में ठुमकता, टपटपाता, दौड़ भरता लेकिन यह कभी नहीं सोचा कि किसी स्टेडियम में शतरंज खेल में घोड़ा बन सैकड़ों लोगों के बीच प्रशंसित होऊंगा। बचपन का घोड़ा अभी भी मुझसे विस्मृत नहीं हुआ है।

रामदेवरा में समाधियों का मंदिर

देवी-देवताओं की लीला अपरम्पार है। कई बार लगता है, सृष्टि का असली संचालन तो उन्हीं के हाथ में है। वैसे भी प्रकृति को कब वश में कर पाया है मनुष्य! भारत भूमि की कई अनेक विशेषताओं में सर्व ओपित विशेषता यह भी है कि यहां पद-पद पर देवी-देवताओं का वास है।

उनकी लीलाओं का रहस्य चमत्कार देखने के लिए दो आंखें तो अत्यंत छोटी हैं। इन देवी-देवताओं के स्थान भी अजीब-अजीब नामों से जाने जाते हैं। देशनोक की करणी जहां चूहों के लिए जानी जाती है वहीं रामदेवरा का रामदेव बाबा का स्थल समाधियों के मंदिर नाम से ख्याति लिए है।

15 फरवरी 1973 को जैसलमेर के सगतमलजी शर्मा (70) से वहां प्रचलित रम्मती ख्यालों की जानकारी के साथ लोकदेव रामदेवजी का प्रसंग चल पड़ा तो उन्होंने बताया कि उनका स्थान रामदेवरा, रुणीचा बड़ा जाग्रत है। वहां समाधियों की बहुलता के कारण लोगबाग उसे समाधियों के मंदिर के नाम से भी जानते हैं।

रामदेवजी की मुख्य समाधि पर कपड़े के बने घोड़े चढ़ाये जाते हैं। समाधि का मुंह पूर्व की ओर है। जिधर पूजा होती है वह भाग जीमणा है। रामदेवजी की प्रस्तर घोड़े वाली प्रतिमा के पास उनके दो लड़के साधाजी तथा देवजी की समाधि है। इनके अलावा नेतलादे राणी, गुरु बालनाथ, जंबोजी, मासीबाई, हड़बूजी, मेहोजी मांगलिया, देतियाजी पेथर, बोईतो साहूकार (बाणियो), पिता अजमालजी, भाई विरमदेव की समाधि है। रामदेवजी की समाधि के बीच उनके दादाजी रणछोड़जी तथा माता मेणादे की समाधि है।

रामदेव भक्त भारतीय लोककला मंडल के नृत्य-कलाकार लालूराम मेघवाल ने 30 अगस्त 1976 को बताया कि वहीं पांच पीर मक्का-मदीना से आये जिन्होंने दातून कर ठूंठे वहीं गाड़ दिये जो रामदेवजी की करामात से पीपली के रूप में हरित हुए। ये पीपली रूंख वहां अभी भी हैं।

रामदेवजी की बहिन डालीबाई ने उनसे तीन दिन पूर्व जीवित समाधि ली। वहीं डालीबाई का पत्थर का कंकण बना हुआ है। उसमें से लोग निकलते हैं। कंकण से निकलने पर व्यक्ति अपने मन में धारे पापों के प्रायश्चित से मुक्त हुआ मानता है। मंदिर के बाहर बाण्या बोइता की बावड़ी है। यहां अंधे-लूलों को ले जया जाता है। ऐसे लोग बावड़ी का सहारा ले वहां बैठ जाते हैं। जिसे बाबा का हुक्म हुआ होता है वह बावड़ी में गिरता पाया जाता है और रोग मुक्त हुआ बाहर आता है।

बाद में बावड़ी पर जाली लगा दी गई। लालूराम ने बताया कि कई लोग आस्थावश जमीन को जीभ से चाटते, बैठे-बैठे खिसकते, दंडवत करते, गुलांछी खाते तो कुछ नहा-धोकर केवल लंगोट पहन खुले बदन में बावड़ी तक पहुंचते हैं। पीपली के पास ढालना यानि पालना है।

वहीं रामसागर तालाब है। हरजी तथा सुगना की समाधि पर कपड़े के छोटे-छोटे घोड़े चढ़ाये जाते हैं। नेतलदे की समाधि पर औरतें कांचली ओढ़ना तथा कातरिया चूड़ियां चढ़ाती हैं। जोधपुर से पांच किलोमीटर दूर मसूरिया में भादवी बीज को मेला भरता है। यहां रामदेवजी के कपड़े के बने घोड़े बनाये जाते हैं। इसके अलावा पोकरण में बड़ी संख्या में छोटी साइज से लेकर बड़े-बड़े घोड़े तक बनाये जाते हैं।

लालूराम ने अपने बड़ेरों के मुंह से सुना बताया कि पहले भादवी बीज को रामसागर में रामदेवजी का नीला घोड़ा अलपजलप जोत के रूप में दिखाई देता था। रामदेव बाबा गर्मी-सर्दी की मौसम द्वारिका में बिराजते हैं। भादवी बीज से ग्यारस तक रामदेवरा पधारते हैं जहां भक्तों को हर समय दर्शन देकर उनकी मुराद पूरी करते हैं। रामदेवरा मेले में जाने वाले लौटते समय वहां से तंदूरा, ईडोणी तथा कलश लाते हैं। दर्शनार्थी अपने घर लौटते समय स्वागतार्थियों को प्रसाद स्वरूप अपने साथ लाई घास की बनी कंठी तथा खांडचने देता है।

रामदेवजी ने कामड़िया पंथ चलाया। कामड़ लोग वर्ष भर ही वहां मिल जाते हैं। मनौती पूरी करने वाले कामड़ औरत से तेराताली स्वरूप भजन सुनकर जम्मा दिलवाते हैं।

रामदेवजी के घोड़े का नाम रेवंत था। यह घोड़ा उनकी तरह ही देव घोड़ा था जो विमान की तरह उड़ता अदृश्य होता जहां चाहे वहां रामदेवजी को पहुंचाता था। मेवाड़ के जरगा नामक पहाड़ पर भी रामदेवजी का आना हुआ। उनके घोड़े का चरवादार सईस जरगा था। रामदेवजी ने उसकी चाह के अनुसार उस स्थान का नाम जरगा देकर वहां धुणी स्थापित की।

प्रसिद्धि है कि गोरखनाथ को दी हुई गूगल से लीली घोड़ी, नरसिंह पांडे, मज्जु चमार, रतना भंगी तथा गोगा एक साथ पैदा हुए जो पांच पीर के नाम से जाने गये। इनकी साथ-साथ पूजा की जाती है। रामदेवजी ने हरजी भाटी को प्रसन्न हो कपड़े का घोड़ा दिया था।

कहा जाता है कि जोधपुर के निकट मसूरिया में एक रात जागरण हुआ। उसमें जोधपुर के राजा विजयसिंह भी शरीक हुए। वहां उन्हें लगा कि हरजी भाटी ढोंगी और पाखंडी है अत: उसे ताले में बंद करवा दिया और कहा कि यदि हरजी का कपड़े का घोड़ा दाना, घास और पानी ले तो समझूंगा कि रामदेव चमत्कारी पुरुष है ओर हरजी की साधनामूलक जो भी करामात लगती है वह पक्की है। यह सुन हरजी ने रामदेवजी की उपासना शुरू कर दी। देखते-देखते घोड़ा पूंछ हिलाने लगा और पास में रखा दाना, घास खाने लग गया। तब से रामदेवरा मेले में पहली आरती जोधपुर दरबार की होती है जिन्हें रामदेवजी ने पहला परचा दिया था।

रामदेवजी की करामात के किस्से जब दूर-दूर फैलने लगे तो पांच पीर उनकी परीक्षा लेने आये। रामदेवजी ने उन्हें भोजन के लिए कहा तो पीर बोले कि हम अपने ही कटोरों में भोजन लेते हैं जिसे हम मक्का भूल आये हैं। यह सुन रामदेवजी ने अपने मंत्र-बल से कटोरे उनके समक्ष कर दिये तब पीर बोले, आज से तुम सबके पीरों के पीर, रामसा पीर हो तब से वे मुसलमानों में पीर के रूप में जाने गये।

सन् 1515 की भादवी सुदी दसमी को रूणेचा में रामदेवजी ने जीवित समाधि ली। उनके यश गान में अनेकों ब्यावले, भजन, स्तुतियां, लीलाएं रची गईं। मेलों में बहुत सारा साहित्य छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में दुकानों पर मिलता है जो फुटपाथी अथवा ठेला साहित्य के नाम से जाना जाता है।

रामदेवजी के मेले में मैंने भी कुछ दिन रहकर वहां के सभी स्थानों का अवलोकन किया और फुटपाथी रूप में बिकनेवाली रामदेव ब्यावला, रामदेव लीला, रामदेव जीवन रत्नावली, रामदेव लीलामृत कथा, रामदेव चालीसा नामक पुस्तकें खरीदीं और इनके लेखकों से भी भेंट की तब धर्मुयुग और अन्य पत्रों में भी मैंने लिखा।

-म. भा.

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 दिसम्बर 2017

सम्पादकीय

प्रशासन के ढुलमुल सोच से शहर शर्मसार

उदयपुर में 14 दिसम्बर को घटी घटना ने शहर की विश्व-छवि को कलंकित करने में कोई कसर नहीं रखी। प्रशासन की ढुलमुल सोच और नासमझी ही इसका मुख्य कारण रही। गृहमंत्री के गृह जिले में इस तरह की घटना से हर व्यक्ति आहत हुआ। शहर के चेटक सर्कल, कोर्ट चौराहा, बापू बाजार, सूरजपोल, हाथीपोल, अश्विनी बाजार क्षेत्रों में धारा 144 कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ती रहीं। पुलिस प्रदर्शनकारियों पर लाठी चार्ज करती रही।

हुआ यह कि एक समुदाय की ओर से गत दिनों रैली निकालकर आपत्तिजनक नारेबाजी की गई। उसके विरोध में दूसरे समुदाय से जुड़े युवा संगठनों ने रैली निकालने की अनुमति चाही लेकिन प्रशासन ने अनुमति तो नहीं दी किन्तु उसकी बजाय पूरे जिले में निषेधाज्ञा लागू करते हुए इंटरनेट भी बंद करा दिया। होना यह चाहिये था कि प्रशासन लोगों को समझाबूझा कर स्थिति पर नियंत्रण करता। उन युवकों की धरपकड़ करता जो आक्रोशित होकर आपत्तिजनक नारेबाजी कर रहे थे किन्तु प्रशासन ने पूरे जिले में धारा 144 लगा कर नेटबंदी करा दी।

यहां के बिगड़े माहौल के पीछे राजसमंद में घटी घटना प्रमुख थी लेकिन प्रशासन ने वहां इंटरनेट सेवाएं बहाल रखीं। इससे स्वाभाविक रूप से माहौल और खराब हुआ। पर्यटक और सैलानियों ने भी कई तरह की मुसीबतें झेलीं। निषेधाज्ञा जैसी संवदेनशील धारा को ठीक से संभाल नहीं पाई और शहर शर्मसार और कलंकित होता रहा।

द्वेष की यह आग प्रशासन की अच्छी समझ और सोच से आसानी से मिटाई जा सकती थी परन्तु ऐसी कौनसी परिस्थिति और दबाव रहा कि जिसके कारण शहर की छवि दागदार हुई। ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इस ओर प्रशासन को अपने किये का मूल्यांकन करते हुए अच्छी छवि पेश करनी होगी।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन में आपके लेख मेरे लिए अमूल्य हैं। 'स्मृतियों के शिखर' में आप विद्वान साहित्यकारों को जो स्नेह पूरित शब्दांजलि का अर्घ दे रहे हैं वह ऐतिहासिक एवं आपकी विस्तृत मैत्री का परिचायक है। भारत की श्रेष्ठ ऐतिहासिक प्रेम कथाएं हिन्दी साहित्य को मेरा अनूठा ऐतिहासिक अवदान है। ऐसा काम पहली बार मेरे द्वारा किया गया है।

-डॉ. शरद पगारे, इन्दौर

शब्द रंजन का नाम ही मुझे अधिक सार्थक लगता है। मैं कोई साहित्य का पाठक नहीं हूं मगर शब्द रंजन पढ़ते-पढ़ते मुझे आपने साहित्य का पाठक बना दिया और साहित्यकारों से भी परिचित होने लग गया। 'स्मृतियों के शिखर' मैं बड़ी रुचि से पढ़ता हूं। साहित्य सृजन के साथ-साथ एक साहित्यकार अपने कितने दायित्वों का निर्वाह किये रहता है।

मुझे लगता है कि प्रतिष्ठित साहित्यकार का लेखन ही प्रतिष्ठामूलक नहीं होता, उसके जीवन का हर पक्ष ही साहित्य से संवेदित लगता है। सामान्य बोली-चाली, व्यवहार तथा जीवन जीने के तरीके आदि में भी मुझे एक साहित्यकार की छवि सामान्य से भिन्न कुछ विशिष्टता लिये लगती है।

यह भी लगा कि हर साहित्यकार की प्रकृति अपने में निराली होती है जो दूसरों से मेल नहीं खाती। यह तो आश्चर्य है कि इन सबसे स्तंभ लेखक की ऐसी आत्मीयता कैसे हुई और पत्राचारों के माध्यम से स्नेहशील वत्सला बनी।

हमारे देश में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की ही तादाद दिनोंदिन बढ़ती जा रही है जबकि सुनने में यह भी लगातार आ रहा है कि हिन्दी-पाठकों की संख्या घटती जा रही है और हिन्दी का स्तर भी गिरता जा रहा है। यदि यह सही है तो मैं शब्द रंजन की भरपूर प्रशंसा करना चाहूंगा कि उसने दोनों ही दृष्टियों से अपना मानक यशस्वी बनाये रखा है।

बड़े अखबार भी जब अधिक समय तक अपना वर्चस्व कायम नहीं रख पाते हैं तो अभावों और संघर्षों के बीच निकलने वाले छोटे पत्रों को हम कैसा मान दें जो अपनी लघुता में निरन्तर गरुता का अहसास दिये रहते हैं।

-रोमेश, रांची

पोथीखाना

करमा संस्कृति और संगीत

उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जनपद में राजगोंड और अगरिया जनजाति में प्रचलित करमा नृत्य पर यह पुस्तक इसलिए भी उल्लेखनीय है कि छुटपुट पत्र-पत्रिकाओं में करमा पर तो पिछले वर्षों में बहुत सारी सामग्री लेखबद्ध प्रकाशित हुई पर पुस्तक रूप में यह महत्वपूर्ण और गंभीर प्रयत्न लेखक डॉ. अर्जुनदास केसरी द्वारा हुआ है।

डॉ. केसरी विगत 5-6 दशकों से उल्लेखनीय लेखन कार्य की वजह से जाने माने विद्वान हैं जिन्होंने आदिवासियों पर भी यथेष्ट लिखा है और उनके विभिन्न दलों द्वारा कई कार्यशालाएं आयोजित की हैं। उनके प्रदर्शन देखे हैं और उन्हीं की कलाधर्मिता को लेकर ठीक से उन्हें प्रशिक्षित भी किया है। कई स्तरीय संगोष्ठियों में आदिवासी जीवन, कर्म कला से संबन्धित पत्रवाचन किये हैं। इससे आदिवासियों पर उनके गंभीर अध्ययन और उनसे जुड़ाव का पता लगता है। कुल 232 पृष्ठों में संयोजित 400 रूपये की यह पुस्तक लोकरुचि प्रकाशन, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र-231216 से प्रकाशित है।

यह पुस्तक कुल 7 अध्यायों में है। पहले अध्याय में विषय से सम्बंधित अभिप्राय, क्षेत्र तथा करमा नामकरण, अर्थभेद, पूजा-परम्परा का दिग्दर्शन है। दूसरे अध्याय में लोकसाहित्य तथा लोकगीतों के स्वरूप पर विवेचन करते हुए करमा की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण दिया है।

तीसरा अध्याय जनजातीय जीवन और करमा विषयक मिथक, कथाएं, प्रदर्शन अवसर, मान्यताएं और अन्य प्रभावों पर साधार विवेचन है। चौथा अध्याय करमा के सांस्कृतिक पक्ष को समर्पित होने के साथ ही उस पर पड़ रहे प्रौद्योगिकी प्रभाव और तद्जनित उपजी विसंगतियों पर प्रकाश डालता है। पांचवां अध्याय करमा के संगीत पक्ष, रचना प्रक्रिया, भाषा, रस, अभिनय पर केन्द्रित है। छठे अध्याय में सोनभद्र की जनजातियों के जीवन और कलाकारों के विभिन्न पक्षों, मान्यताओं पर लिखा गया है। उपसंहार में करमा के कथ्य एवं तथ्य पर अध्ययन का समाहार दिया गया है। पुस्तक उपयोगी और ज्ञानवर्धक के साथ-साथ संग्रहणीय है।

सबके लिए पठनीय आहार प्रबन्धन

पहले धन संग्रह के लिए हमारे देश की प्रसिद्धि थी। कहा जाता था कि हर परिवार में गड़ा धन सुरक्षित है। जितने भी गढ़-गढ़ैया थे उनमें अपार धन-राशि खजानों में छिपी रहती थी। ऐसा भी हुआ जब कई लोगों को अपने खजनों की जानकारी ही नहीं थी। अब समय ने पलटा खाया है। अधिक से अधिक ध्यान व्यक्ति अपने खान-पान और रहन-सहन पर कन्द्रित करने लग गया है और उसका भी ठीक ढंग से प्रबन्धन होने लग गया है।

शिक्षाक्षेत्र में भी यह एक विज्ञान और कला के रूप में स्वतंत्र विषय के रूप में शिक्षण का आधार बना है। पत्र-पत्रिकाओं में भी लगातार आहार-प्रबन्धन पर उत्कृष्ट सामग्री प्रकाशित हो रही है। अब व्यक्ति अधिक तन्दुरुस्त रहने लगा है। बीमारियों को अच्छी तरह से रफादफा कर सुखी जीवन जीने का विश्वासी बन गया है।

मुनि मनितप्रभ सागर का अधिकांश लेखन मनुष्य के बेहतर जीवन जीने के लिए आवश्यक धर्म-कर्म की संयम एवं अनुशासनजनित चर्या एवं सात्विक पर्यावरणीय संधान की खोज-दृष्टि लिये है। उसके लिए उन्होंने परम्परा स्वरूप चली आ रही धारणाओं एवं मान्यताओं को नई पहचान देकर उनकी मूल्यवत्ता सिद्ध करते हुए नवोन्मेष दिया है।

धर्म को भी जीवनशक्ति के असल संतुलन से सुरक्षित किया है। समय के परिवर्तित होते प्रभावों को ग्रहण करते हुए पुरातन को नई ऊर्जा दी है और मंद पड़ते महावर को नये रंग-रूप से संवारकर संश्लिष्ट संरक्षण की प्रस्तुति दी है।

इस दृष्टि से आहार प्रबंधन पुस्तक उल्लेखनीय है जो निरोगी तन, निर्विकारी मन और निर्मल जीवन का सर्वोत्तम उपहार ही है। इसमें आकर को लेकर 51 प्रबन्धनों पर बड़ी गहरी निष्ठा से शोधपूर्ण वैचारिक तथा वैज्ञानिक संस्तुतियां दी गई हैं।

यथा- सारी जरुरतों में से जल सबसे पहली जरुरत है। जल न हो तो कल तो क्या आने वाला पल भी न हो। ठण्डा और गरम पानी मिश्रित न करें। पानी का घी की तरह उपयोग करें। दान दूषित होने के छह कारण बताते हुए कहा गया है- अनादरपूर्वक देने से, बिलम्ब से देने से, मुंह सिकोड़कर देने से, उपकार जताने से, अप्रिय वचनपूर्वक देने से तथा दान के बाद पश्चाताप करने से।

- अन्नदान श्रेष्ठ दान कहा गया है। इससे अन्न पुण्य का बन्धन होता है। इस दान से व्यक्ति अकाल-दुकाल में भी भूखा नहीं रहता। उसके भंडार धान्य से भरे पूरे रहते हैं।

-मक्खी चूस जो न खाये ना खिलाये। कंजूस जो खाये पर खिलाये नहीं। दाता जो खाये और खिलाये तथा उदार जो भूखा रहकर खिलाये।

- भोजन क्यों, कब, कैसे, कहां तथा कितनी बार करना चाहिये। अति को सभी ने ठीक नहीं कहा है।

- अति रूप से सीता का हरण, अति गर्व से रावण का विनाश, अति दान से बलि राजा का वध और अति भोजन से कण्डरिक का मरण हुआ। कम खाओ तो ज्यादा जीओगे। कम खाने से दीर्घायु मिलती है। बहुत भूख और बहुत भोजन दोनों ही खराब हैं।

-आधा भोजन दुगुना पानी तिगुना श्रम और चौगुनी हंसी से व्यक्ति सवा सौ वर्ष जीता है। शाकाहार को दैवीय तथा मांसाहार को दानवीय आहार कहा गया है।

बड़ी साइज की 96 पृष्ठीय इस पुस्तक में आहार को लेकर सब कुछ है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तथा वरिष्ठों के लिए यह अत्यंत आवश्यक रूप से पठनीय है। प्रतिदिन इसका एक-एक पन्ना ही पढ़ें पर अवश्य पढ़ें। हर घर में इसकी प्राथमिकता से उपस्थिति हो। इसीलिए लागत मूल्य 100 रूपये है पर विक्रय मूल्य 50 रूपये रखा गया है। हर पृष्ठ रंगीन, सचित्र, आकर्षक, कई संदर्भों, परम्परा से चले आ रहे श्लोकों, कहावतों तथा मिथकों के साथ प्राचीन दृष्टांतों से वैज्ञानिक निरुपण करती यह पुस्तक जिसने भी पढ़ी उसने स्वस्थ जीवन जीने का लाभ अर्जित किया, महसूस होगा। श्री जिनकांति सागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर, मांडवला-343042 से इसका प्रकाशन हुआ है।

प्रभा माथुर की चार पुस्तकें

प्रभा माथुर पिछले लम्बे अर्से से साहित्य की सभी विधाओं में लिख-छप रही हैं। अनेकों पुरस्कार भी उनके लेखन ने प्राप्त किये हैं। 'लक्ष्मण रेखा' नाम से उनका पहला काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। 'धुली-धुली शाम का उजाला' नामक उपन्यास पर तो वे अनेकों बार पुरस्कृत हुईं। बालसाहित्य का सृजन भी उनके हाथों हुआ है। निर्भीकता, स्पष्टवादिता, स्वाभिमान उनके चरित्र की विशेषता है जो उनके लेखन में देखने को मिलती है।

'धुली-धुली शाम' उपन्यास में प्रभाजी ने मन की कुंठाओं को तोड़ने का सफल प्रयास किया है। लिखा है- ''प्यार का रिश्ता कच्चे धागों से नहीं बंधा होता। न ही वह इतना कच्चा होता है कि झट टूट जाये।

प्रिया ने बड़े विश्वास के साथ मन की कुंठाओं के जाल को काटा है। अपनी अभिलाषा को फलदायी बनाने के लिए उसने दृढ़ निश्चय ले लिया था। मांगे का प्यार पानी का बुलबुला होता है, फूटता ही रहता है। वह गहरा समन्दर खोज रही थी जिसमें डुबकियां लगा सके। उसकी शाम के उजाले फैलते गये।''

'लौ' नामक कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियां हैं। प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने इन कहानियों की सराहना करते हुए लेखिका की कलम की धार को बहुत तेज बताया जिससे समस्याओं का निराकरण भी होता है। ऐसा ही पन्द्रह कहानियों का संग्रह 'आधी कृति' नाम से है। इन कहानियों का उद्देश्य लेखिका के शब्दों में- ''बेहतर जीवन के जरिये बेहतर विचारधारा होनी आवश्यक है। नकारात्मक विचार हमारे विकास में बाधक होते हैं। पुरानी अनउपयोगी वस्तुएं घर में जगह घेर लेती हैं, उन्हें बाहर निकालना ही उचित है। बुरे विचारों से अच्छे उपेक्षित विचार ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते इसलिए उनसे मुक्ति पाना ही बेहतर है।''

'ऐसा क्यों' आठ एकांकी नाटकों का संग्रह है। इन नाटकों में नदी के बेकाबू होते बहाव के लिए बांध बनाने का आव्हान है। उल्लेखनीय है कि प्रभाजी बचपन से ही नाटकों में अभिनय करती रही हैं इसलिए उन्हें रंगमंचीय रूपों का गहन अनुभव है। नाटक लेखन की प्रेरणा भी उन्होंने अपने अभिनय के दौरान प्राप्त की। फिल्म इंस्टीट्यूट से भी उनका जुड़ाव रहा। फिल्मों में भी भाग लिया और जब दिल्ली दूरदर्शन से उनके नाटक प्रसारित हुए तब स्वयं प्रभाजी ने भी उनमें अपने अभिनय की छाप छोड़ी। इन पुस्तकों का प्रकाशन दीपा माथुर की देखरेख में 3, महिन्द्रा सोसायटी, नगर रोड़, पुणे-411006 से हुआ है। **-सत्पुरुष**

स्वस्तिक का शुभ विवाह

डॉ. महेन्द्र भानावत के अग्रज प्रख्यात हिन्दी-राजस्थानी के सुलेखक डॉ. नरेन्द्र भानावत के सुपौत्र स्वस्तिक का शुभविवाह सोनाली के साथ 8 दिसम्बर को जयपुर में सानंद सम्पन्न हुआ। पूना से एमबीए स्वस्तिक बैंगलोर एमेजोन में कार्यरत हैं।

भाई साहब डॉ. संजीवजी जयपुर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा भाभीश्री

कौशल्याजी अर्थशास्त्र विभाग की अध्यक्षा हैं। गलता गेट के पास स्थित अरिहंत वाटिका में आयोजित इस विवाहोत्सव में सभी परिजनों के साथ दूरदराज के समधियों एवं परिजनों के अतिरिक्त विशिष्ट विद्वानों, शिक्षकों, समाजसेवियों तथा धर्मनिष्ठों ने अपनी गौरवमय उपस्थिति दी। शब्द रंजन परिवार की हार्दिक बधाई।

विवाह से लौटते हुए

स्वस्तिक के विवाह में शरीक होने के बाद 9 दिसंबर प्रात:काल 6 बजे हम जयपुर से निकल पड़े। मेरे साथ पापा डॉ. महेन्द्र भानावत तथा बहिन-बहनोई डॉ. कहानी-जितेन्द्रजी मेहता थे। हमारी यात्रा अपनी निजी कार से थी।

जयपुर से निकलते समय हमारा मन बना कि यहां से लक्ष्मणगढ़ अधिक दूर नहीं है अत: अच्छा रहेगा कि वहां के मोदी विवि में अध्ययन कर रही कहानी दीदी की पुत्री, मेरी भानजी युक्ता से मिलते हुए चला जाय।

हमारी यात्रा चल ही रही थी कि बीच चौमू पर खाटू लिखा देखा। इससे पूर्व सीकर निवासी मेरे अजीज आदरणीय बालमुकुन्द जोशी जो एक पत्रकार के साथ सामाजिक सरोकारों से जुड़े उस क्षेत्र के नामचीन व्यक्तियों में से हैं, से मैंने उधर प्रवास में होने की जानकारी दी तो उन्होंने बताया कि आप खाटू श्यामजी के दर्शन अवश्य करें। आपके मुख्यमार्ग से मात्र 18 किलोमीटर की दूरी लिए प्रसिद्ध यह तीर्थस्थल है। हमने वह मार्ग पकड़ा।

उसी बीच उनका संदेश मिला कि आपको दर्शनों के लिए लंबी प्रतीक्षा न करनी पड़े अत: आप वहां रामअवतारजी शर्मा से संपर्क कर लें। उनके दिये मोबाईल नं. से मैंने उनसे संपर्क किया तो वे अति प्रसन्न हुए और कहा कि मैं मुख्य रास्ते पर ही आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूं। मुश्किल से पांच मिनिट में ही हम उन तक पहुंच गये। श्री शर्माजी बड़े ही संजीदा, आत्मीय और इतने मृदुल व्यवहारी लगे कि हम उनके स्नेह-सौजन्य के कायल हो गये। बिना किसी देरी के उन्होंने हमारे साथ अपने सुपुत्र सुशीलजी शर्मा को भेजा और बोले कि दर्शन कर आप पुन: मेरे निवास पर आयेंगे। यहां से बिना मिले, भोजन किये आप नहीं जा सकेंगे। बालमुकुंदजी ने आपके संबंध में जो जानकारी दी, मेरा सौभाग्य हुआ कि आप जैसे सज्जनों से मिलना संभव हो सका। सुशीलजी ने हमें तत्काल ही बिना किसी प्रतीक्षा के अग्रिम पंक्ति-पथ से श्याम बाबा के दर्शन करा दिये। हमारी यात्रा का यह शुभारंभ हमें हमारे सभी मनोरथों का साफल्य देता लगा। उदयपुर की दूरी को देखते हुए हमने उनसे क्षमायाचना करते हुए विदाई ली और अपना गंतव्य पकड़ा। मैंने मोबाईल पर रामअवतारजी से श्याम बाबा के सुदर्शन बाबत आभार व्यक्त किया और मजबूरी बताते हुए पुन: भेंट नहीं करने का अफसोस व्यक्त किया।

वहां से लौटते सीकर बाईपास पहुंच बालमुकुंदजी को फोन मिलाया किंतु उनसे संपर्क नहीं बना। थोड़ा ठहरकर फिर फोन किया तब भी घंटी लगातार जाती रही लेकिन बात नहीं हो पाई। मैं समझ ही नहीं पाया कि ऐसा कैसे क्यों हो रहा है। सड़क पर ही दस मिनट की प्रतीक्षा कर हमने निर्णय लिया कि मिलना तो उन्हीं से है। उनसे बिना संपर्क के सीकर में प्रवेश करने का भी क्या औचित्य है। देर अलग हो रही है और समय रहते हमें उदयपुर भी पहुंच जाना चाहिये।

यह सोच हम सीधे लक्ष्मणगढ़ पहुंचे। मुख्य सड़क पर ही मोदी यूनिवर्सिटी है। सारी औपचारिकताएं पूरी कर हमने भीतर प्रवेश लिया। युक्ता (चेरी) हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। उस दिन उसके अवकाश था सो करीब घंटा भर हम उसके साथ रहे। उसका हॉस्टल, कॉलेज परिसर, केफेटेरिया आदि का जायजा लेकर वहीं चाय-नाश्ता किया।

मोदी विश्वविद्यालय देखकर हमें लग ही गया कि पूरे देश में बालिका शिक्षा के लिए जो उसकी ख्याति है उसी के अनुरूप वहां का वातावरण और लड़कियों के रहने, खाने-पीन आदि की सारी सुविधाएं सुलभ हैं। करीब एक बजे हमने यहां से प्रस्थान किया। इस बीच बालमुकुंदजी का फोन मिला। बोले कि मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं। कहां हैं अभी तक नहीं पहुंचे! मैंने उन्हें बीती घटना की जानकारी दी तो उन्हें जो अफसोस हुआ उसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। मिलने का मुख्य प्रयोजन ही उन्हीं से था लेकिन हमारे भाग्य में शायद यही बदा था। यही नियति को मंजूर था।

लक्ष्मणगढ़ से चलकर हमने अपना गंतव्य पकड़ा कि बालमुकुंदजी ने हमें बताया कि बीच रास्ते में सालासर बालाजी का प्रसिद्ध मंदिर आयेगा। आप वहां अवश्य बालाजी के दर्शन करलें। उन्होंने हमें वहां के श्री हनुमान सेवा समिति के व्यवस्थापक जीतमलजी से संपर्क कर उनके माबाईल नं. दिये। मैंने उनसे संपर्क किया और सीधे पहुंच गये। वे हमारी प्रतीक्षा में थे। उन्होंने बिना कोई देरी किये हमें अग्रिम पंक्ति से बालाजी के दर्शन करा दिये।

बाद में अपने ऑफिस में बड़ी आत्मीयता से हमें चाय-नाश्ता ही नहीं कराया अपितु वर्तमान अध्यक्ष श्री यशोदानंदनजी पुजारी की ओर से उनके भतीजे गौरीशंकरजी शर्मा द्वारा पापा डॉ. महेन्द्र भानावतजी का भावभीना अभिनंदन-सम्मान किया। वहां की खातिरदारी से हम जितने चकित थे उतने ही चकित-छकित बालमुकुंदजी द्वारा अग्रिम से अग्रिम तत्परतापूर्वक व्यवस्था और मार्गदर्शन से हम अभिभूत ही होते रहे। इनसे मुझे यह सीख भी मिली कि आत्मीयता के ऐसे घनिष्ट रिश्तों का निर्वाह कोई उनसे सीखे। इस प्रकार हमारी यह यात्रा सेंतमेंत में ही दो-दो महा देवों के सुखद सुदर्शनों के साथ स्थायी रूप से यादगार बन गई।

-डॉ. तुक्तक भानावत

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र में डॉ. भानावत का सम्मान

भारत सरकार द्वारा संचालित सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा उदयपुर स्थित केन्द्र में आयोजित शिक्षा में पुतली कला की भूमिका विषयक कार्यशाला में आमंत्रित पुतलीकला के विशिष्ट अध्येता डॉ. महेन्द्र भानावत का सम्मान किया गया। यह सम्मान दिल्ली स्थित केन्द्र मुख्यालय के सहायक पुतलीकार कौशिक सिन्हा राय के सान्निध्य में 15 दिसंबर को प्रतिभागियों के प्रतिनिधि महाराष्ट्र के गुलानी गांव के कल्याण मूर्ति पिंगले द्वारा महाराष्ट्र की विशिष्ट पहचान टोपी पहनाकर किया गया।

श्री कौशिक ने बताया कि 6 दिसम्बर से 20 दिसम्बर तक आयोजित इस कार्यशाला में 9 प्रांतें के 63 शिक्षक भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक स्त्रोत द्वारा उदयपुर, गौहाटी तथा हैदराबाद में ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र चलाये जा रहे हैं। कौशिक इन केन्द्रों के माध्यम से पिछले 8 वर्षों में लगभग साढ़ा तीन हजार शिक्षकों को शिक्षा में पुतली कला की भूमिका से जुड़े विविध स्वरूपों का प्रशिक्षण दे चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि उदयपुर में पिछले 25 वर्ष से प्रशिक्षण केन्द्र कार्यरत है। डॉ. भानावत प्रारंभ से ही इस केन्द्र से जुड़े हुए हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में कठपुतली कला के उद्भव, विकास तथा उसकी शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ विश्व में हो रहे विविध प्रयोगों से प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा राजस्थान को इस कला का मुख्य कारक बताया और भारतीय लोककला मंडल द्वारा किये गये प्रयोगों द्वारा विश्वव्यापी उपलब्धियों से इस कला के कीर्तिमानों को संपोषित किया।

श्री मदनलालजी पीतलिया नहीं रहे

मूलत: राजसमंद जिले के लसानी गांव के निवासी मदनलालजी पीतलिया का 81 वर्ष की उम्र में 13 दिसम्बर को असामयिक निधन हो गया। उन्होंने उदयपुर को अपनी कर्मभूमि बनाते हुए नौकरी के साथ-साथ उच्चशिक्षा ग्रहण करते इंडिया मशीनरी मार्ट की स्थापना की।

अल्पायु में मां के निधन के पश्चात उन्होंने अपने पिता गोकुलचंदजी की सेवा करना ही अपना परमधर्म समझ अंत तक उनका सान्निध्य पाते रहे। पिताश्री बड़े धर्मनिष्ठ, ईमानदार, सरलमना, सात्विक जीवन की आदर्श मूर्ति थे। तेरापंथ धर्मसंघ के चार आचार्यों का सान्निध्य प्राप्त कर उन्होंने आदर्श श्रावक के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की। मदनजी ने अपने माता-पिता के सारे संस्कार ग्रहण कर अपनी विशिष्ट पहचान दी।

पितृभक्त मदनजी ने 95 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में 'गोकुल गौरव' नाम से पिताश्री पर अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन करवाया। अपनी सहधर्मिणी कमलाकुमारी के निधन पर 'कर्मशीला कमलाजी' स्मृति ग्रंथ का इसी वर्ष बसंत पंचमी को प्रकाशन कर अपने सुसराल भीण्डर में एक विशाल समारोह में लोकार्पित करवाया। इससे ग्राम्यांचलों तक मदनजी का नारी जाति के प्रति सम्मान और गौरव का अनुपम उदाहरण स्थापित हुआ।

मदनजी ने 'व्यापारे वसति लक्ष्मी' के सिद्धान्त को अपनाते हुए अपने मुनाफे का भाग निश्चित रखा। वे अपने द्वारा अर्जित राशि का एक अंश धर्मार्थ कार्यों में लगाते रहे। उन्होंने 2015 में गोकुल चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना कर शिक्षा, सेवा तथा रोगोपचार में महत्वपूर्ण योग दिया।

उन्होंने अपने परिवार में छहों पुत्रियों तथा दोनों पुत्रों को उच्च शिक्षा-सम्पन्न बनाया। अपने जीवनकाल में उन्होंने पूर्णरूपेण धार्मिक एवं संयमित जीवन व्यतीत किया और अचानक ही सदैव के लिए सबसे विदा हो गये। सम्प्रति एवं शब्द रंजन परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

कहावतों के कहकहे (5)

(56) कई फूस रौ तापणौ
(57) कठै राजारी रेवाड़ी नै कठै नाई रौ रेड्यौ
(58) कड़वी बोलै मायड़ी नै मीठा बोलै लोग
(59) कड़वी बैल रे मीठा फल नी लागै
(60) कण-कण हंच्या मण व्है
(61) कण तो हंचै नै कूगा खा
(62) कण मण री खबर पड़े
(63) कदी घी घणा नै कदी मूठी चणा
(64) कपड़ा रे कारी लागै पेट रै कारी थोड़ी लागै
(65) कपड़ो नूर खुदा रौ
(66) कपूत बेटो कूंता लारै, वगड़ी वऊ वनोला लारै
(67) कबूतरा ने कुड़ोई सूझै
(68) कॅरगेट्या ज्यूं रंग बदले
(69) करणी जसी आपरी कुण बेटा कुण बाप

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को मिली प्रियंवदा बिड़ला छात्रवृतियां

उदयपुर। श्रीमती प्रियंवदा बिड़ला, पूर्व चेयरपर्सन, एमपी बिड़ला समूह की पुण्य स्मृति में माधव प्रसाद प्रियंवदा बिड़ला एपेक्स चैरिटेबल ट्रस्ट ने 2013 में प्रियंवदा बिड़ला छात्रवृत्ति की शुरुआत की। इस छात्रवृत्ति को कम आय वाले समूह, पश्चिम बंगाल के कॉलेजों और संस्थानों में स्नातक पाठ्यक्रमों में पढ़ने वाले जरूरतमंद मेघावी छात्रों और विद्यार्थियों को प्रदान किया जा रहा है। द साउथ प्वाइंट एजुकेशन सोसाइटी, जो दुनिया के सबसे बड़े स्कूलों में से एक को चलाती है, को इस योजना को लागू करने का कार्य सौंपा गया है, जबकि ट्रस्ट इसे वित्तीय संसाधन उपलब्ध करवा रहा है। इस छात्रवृत्ति योजना में 25 सफल आवेदकों को ट्यूशन फीस, बोर्डिंग और मैस शुल्क तथा अध्ययन सामग्री के लिए अपने खर्चों को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष प्रत्येक को 24,000 रुपए का भुगतान किया जा रहा। हर्ष वी. लोढ़ा ने कहा कि हम आज 25 अंजान नायकों को सम्मानित करते हुए सम्मानित महसूस कर रहे हैं।

प्रियंवदा बिड़ला छात्रवृत्ति के विजेता, हमें प्रेरणा देते हैं, हमें प्रेरित करते हैं, हमें सिखाते हैं और हमें जमीनी परिस्थितियों पर बने रहने में मदद करते हैं। हर्ष वी. लोढ़ा, श्रीमती अनामिका लोढ़ा, ट्रस्टी माधव प्रसाद प्रियंवदा बिड़ला एपेक्स चैरिटेबल ट्रस्ट ने कोलकाता में एक समारोह में 5,000 उम्मीदवारों में से 25 प्राप्तकर्ताओं को छात्रवृत्ति प्रदान की।

प्रधान क्लब ने जीता जिला स्तर का फाइनल मैच

उदयपुर। ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी खेल प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से वंडर सीमेंट की ओर से आयोजित किए जा रहे साथ: 7 क्रिकेट महोत्सव के द्वितीय चरण के जिला स्तरीय मैच रविवार को राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात में खेले गए। उदयपुर में जिला स्तरीय क्रिकेट का फाइनल मुकाबला शिकारबाड़ी मैदान पर खेला गया। उतार चढ़ाव से भरे इस रोमांचक मैच में प्रधान क्लब विजेता रही। विजेता टीम को मुख्य अतिथि एएसपी बृजेश सोनी ने ट्रॉफी, प्रमाणपत्र और 14,000 रूपये नकद प्रदान कर सम्मानित किया।

वंडर सीमेंट के निदेशक विवेक पाटनी ने कहा कि विश्व का सबसे बडा कंज्यूमर इंगेजमेंट कार्यक्रम 'वंडर सीमेंट साथ :7 क्रिकेट महोत्सव' लोगों का दिल जीत रहा है। तहसील और जिला स्तर पर मैच खेलने के बाद 51 विजेता टीमें टूर्नामेंट के जोनल स्तर में प्रवेश कर गई हैं। राजस्थान, गुजरात और मध्यप्रदेश तीनों राज्यों के लोगों ने हमारी अपेक्षा से कहीं बढ़कर इस आयोजन में दिलचस्पी दिखाई है। इस वर्ष 60 से ज्यादा महिलाओं की टीमों का पंजीकरण प्राप्त हुए। टूर्नामेंट में महिला खिलाड़ियों की भागीदारी 1000 से अधिक रही है। श्री पाटनी ने बताया कि साथ:7 क्रिकेट महोत्सव के तहसील स्तर के मैचों में कुल 11 शतक, 79 अर्धशतक तथा 7 हैट्रिक बनाए गए। जिला स्तर के मैचों में भी खिलाड़ियों ने दमदार प्रदर्शन किया। उदयपुर में प्रधान क्लब के मुस्तकिम बारेजा ने 28 गेंदों में 101 रनों का रिकॉर्ड बनाया। अहमदाबाद में विशेष गृहिणियों की टीम ने मैचों में हिस्सा लिया तथा साथ: 7 जिला फाइनल्स तक पहुंच गई। सूर्य क्रिकेट क्लब, फल्गी के कमलेश मीना ने जयपुर जिला स्तर मैचों में हैट्रिक बनाया। श्री पाटनी ने बताया कि टूर्नामेंट के अगले स्तर के लिए विजेता टीमें अब 8 जोन पर भिड़ेंगी। प्रतियोगिता का फाइनल मैच 24 दिसंबर को झीलों की नगरी उदयपुर में भारतीय क्रिकेट टीम के भूतपूर्व कप्तान कपिल देव की उपस्थिति में होगा।

एमपी बिड़ला व मोहन बागान में सहभागिता

उदयपुर। बिड़ला कॉर्पोरेशन लि. की प्रमुख सीमेंट ब्रांड कंपनी एमपी बिड़ला सीमेंट ने 2017-18 के आगामी फुटबॉल सीजन के लिए मोहन बागान एथलेटिक क्लब के साथ सहभागिता का ऐलान किया है।

यह सहभागिता 21 नवम्बर 2017 को हीरो आई- लीग की शुरुआत के साथ शुरू हो चुकी है। मोहन बागान का बिग डर्बी मैच 3 दिसंबर, 2017 को ईस्ट बंगाल के साथ हुआ। इस साझेदारी में वे सभी टूर्नामेंट शामिल होंगे जिनमें आने वाले फुटबॉल सीजन में मोहन बागान की टीम खेलेगी।

संदीप रंजन घोष, एग्जीक्यूटिव प्रेसिडेंट, बिक्री, लॉजिस्टिक्स एवं मार्केटिंग, बिड़ला कॉर्पोरेशन लि. ने कहा कि फुटबॉल पूरे देश में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है, खासकर पूर्वी क्षेत्र में इसे बेहद पसंद किया जाता है। इस विरासती खेल की लोकप्रियता को और बढ़ावा देने के लिए, हमने खुद को मोहन बागान एथलेटिक क्लब के साथ जोड़ा है, जिसकी एक संपन्न विरासत है और इसे राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त है। सिरींजॉय बोस, मोहन बागान एसी, ने इस सहभागिता का स्वागत किया और कहा कि हमें एमपी बिड़ला सीमेंट के साथ हमारे संबंधों पर गर्व है। इस सहयोग से दोनों संगठनों को फायदा होगा और भारत में फुटबॉल को और प्रसारित करने में काफी मदद मिलेगी।

दीपिका, करीना, कैटरीना, माधुरी, श्रीदेवी सम्मानित

उदयपुर। लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स का मकसद सिनेमा जगत की ऐसी सम्मोहित करने वाली प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों का सम्मान करना है, जिन्होंने अपनी खूबसूरती और जीवंत अभिनय से परदे पर चरित्रों को साकार किया है। इस साल लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स का आयोजन मुंबई के यशराज स्टूडियो में किया गया। अभिनेता शाहरुख खान द्वारा होस्ट किया गया ये आयोजन बॉलीवुड की अभिनेत्रियों की एक भव्य अवार्ड नाईट थी। शो में जूही चावला को लक्स गोल्डन रोज अवॉर्ड ऑफ लेजेंड्री ब्यूटी से सम्मानित किया गया। श्रीदेवी को 'मॉम' फिल्म में अद्भुत अभिनय के लिए पावर-पैक्ड ब्यूटी ऑफ द ईयर के लिए लक्स गोल्डन रोज अवॉर्ड दिया गया। माधुरी दीक्षित को लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स फॉर टाइमलेस ब्यूटी के लिए सम्मानित किया गया। आलिया भट्ट को फिल्म डियर जिंदगी में उनके बेहतरीन अभिनय के लिए वर्सेटाइल ब्यूटी ऑफ द ईयर के श्लक्स गोल्डन रोज अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। दीपिका पादुकोण को अनस्टॉपबल ब्यूटी ऑफ द ईयर टाइटल दिया गया।

तापसी पन्नू और भूमि पेडनेकर को साल के ब्रेकथ्रू परफॉर्मेंस के लिए सम्मानित किया गया। करीना कपूर खान को लक्स गोल्डन रोज अवॉर्ड 'आई एम मोर देन यू केन सी' से सम्मानित किया गया। कैटरीना कैफ को लक्स गोल्डन रोज अवार्ड् फॉर करिज्मेटिक ब्यूटी ऑफ द ईयर अवॉर्ड दिया गया। नई प्रतिभाओं में दंगल फिल्म की एक्ट्रेस फातिमा साना शेख और जायरा वासीम को साल के उभरते सौंदर्य के लिए लक्स गोल्डन रोज अवॉर्ड दिया गया।

वोडाफोन एम-पैसा ग्रामीण राजस्थान को बना रहा है कैशलैस

उदयपुर। भारत सरकार के डिजिटल इण्डिया प्रोग्राम को समर्थन प्रदान करने के उद्देश्य से वोडाफोन एम-पैसा राजस्थान के ग्रामीण एवं शहरी नागरिकों को कैशलैस जीवनशैली अपनाने में मदद कर रहा है। राजस्थान में बैंकिंग और नॉन बैंकिंग सेवाओं से जुड़े 75 प्रतिशत ग्राहक, इएम्आई जमा कराने के लिए एम-पैसा की सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। राजस्थान के 33 ज़िलों में वोडाफोन एम-पैसा के 14 लाख पंजीकृत उपभोक्ता हैं और इनमें से ज़्यादातर उपभोक्ता दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों से भी आसानी से धन प्रेषण एवं ईएमआई भुगतान सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि राजस्थान में तीन साल पहले वोडाफोन एम-पैसा की शुरूआत करने के बाद एम-पैसा अब दूर-दराज के इलाकों के लोगों के लिए भी डिजिटल भुगतान एवं धन प्रेषण का त्वरित, सुरक्षित और आसान तरीका बन गया है। वोडाफोन एम-पैसा आज के परिवेश में लोगों के जीवन को आसान बना रहा है।

ऐसे समय में जब राज्य में बड़ी संख्या में लोग आज भी बैंकिंग सेवाओं से वंचित हैं, एम-पैसा उन्हें रोज़मर्रा के जीवन में आसानी से भुगतान करने तथा 'कैशलैस जीवनशैली' अपनाने में मदद कर रहा है। वोडाफोन एम-पैसा हर किसी के लिए आदर्ष डिजिटल वॉलेट है। यह सभी मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं के लिए ऐप एवं षॉर्ट कोड *400 # के माध्यम से यूएसएसडी मोड में उपलब्ध है। यह राजस्थान में अपने 7,000 टच पॉइन्ट्स के माध्यम से उपयोगकर्ता को धन के डिजिटल स्थानान्तरण, बिलों के भुगतान, रीचार्ज, परिवार/ दोस्तों को पैसे भेजने या पैसे निकालने में सक्षम बनाता है।

ओरल हेल्थ माह की घोषणा

उदयपुर। इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आईडीए) की साझेदारी में ओरल केयर में मार्केट लीडर, कोलगेट-पॉमोलिव (इंडिया) लि. ने ओरल हेल्थ माह (ओएचएम) 2017 के एडिशन की घोषणा की। ओएचएम इस समय अपने 14वें साल में है और एक राष्ट्रव्यापी अभियान के रूप में यह 33 मिलियन से अधिक भारतीयों को निशुल्क डेंटल चेक-अप व परामर्श प्रदानकर उन्हें लाभान्वित कर चुका है। नवंबर में प्रारंभ हुआ यह अभियान 31 जनवरी 2018 तक जारी रहेगा। इसमें 1276 शहरी, 156 आर्मी कैंटीन, 81 आधुनिक ट्रेडस्टोर पर डेंटलचेक-अप किए जाएंगे।

कोलगेट-पॉमोलिव (इंडिया) लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर इसाम बचलानी ने कहा कि ओएचएम 2017 में एक नई अद्वितीय पेशकश, वॉईस-बेस्ड इंटरेक्टिव प्रोग्राम, पॉकेट डेंटिस्ट है, जिसके द्वारा लोगों को सभी ओएचएम पैक्स पर दिए गए नंबर पर मिस कॉल देकर फोन पर निशुल्क ओरल केयर टिप्स/गाईडेंस प्राप्त हो सकती है। कोलगेट ने यह प्रोग्राम प्रारंभ करने की जरूरत को समझते हुए इसे ओएचएम 2017 में समाविष्ट किया। यह एक डेंटल सर्वे के परिणामों पर आधारित है, जिसके अनुसार 90 प्रतिशत भारतीय डेंटिस्ट के पास नियमित तौर पर नहीं जाते हैं।

इंडियन डेंटल एसोसिएशन के महासचिव डॉ. अशोक ढोबले ने कहा कि ओरल हेल्थमाह भारत के सबसे बड़े ओरल केयर अभियानों में से एक हैं, जिसमें देश की ओरलहेल्थ में सुधार लाने के लिए कोलगेट और आईडीए मिलकर प्रयास करते हैं। ओएचएम 2017 के तहत लगभग 35000 आईडीए डेंटिस्ट निशुल्क डेंटल चेक-अप प्रदान करेंगे।

रोजगार शिविर में 416 आशार्थियों का प्रारंभिक चयन

उदयपुर। वर्तमान राज्य सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन एवं रोजगार विभाग के सहयोग से फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय में रोजगार सहायता शिविर का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल ने किया। सहायक निदेशक (रोजगार) प्रेमाराम ने बताया कि शिविर में 4000 आशार्थियों एवं 33 विभिन्न कम्पनियों एवं संस्थानों ने भाग लिया। इस अवसर पर 6 सरकारी विभागों की ओर से प्रदर्शनी भी लगाई गई। शिविर में विभिन्न निजी नियोजकों द्वारा रोजगार 416 आशार्थियों का प्रारंभिक चयन किया गया तथा विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रशिक्षण हेतु 564 आशार्थियों का चयन करने के साथ ही 481 आशार्थियों को स्वरोजगार व कैरियर मार्गदर्शन दिया गया।

'921 डी आई एक्सकेवेटर' और '611 कम्पैक्टर' लांच

उदयपुर। लियुगोंग इंडिया, गुवांगज़ी लियुगोंग की 100 प्रतिशत सब्सीडियरी, दुनिया की सबसे बड़ी

व्हील लोडर निर्माता कम्पनी ने 2 नए प्रोडक्ट - 921 डी आई एक्सकेवेटर और 611 कम्पैक्टर लांच किया है।

लियुगोंग इंडिया के प्रबंध निदेशक वू सांग ने कहा कि लियुगोंग इंडिया के लिए 2 नए प्रोडक्ट -921 डी आई एक्सकेवेटर और 611 कम्पैक्टर लांच करना बड़े गर्व और खुशी की बात है। भारत के ग्राहकों के लिए कम्पनी के एक्सकेवेटरों और कम्पैक्टरों की पूरी रेंज़ उपलब्ध होगी जो (ग्राहकों के) कभी भी, किसी भी काम को बखूबी पूरा करने के लिए खास तौर से बनी है। 'मेक इन इंडिया' की दिशा में कदम से कदम मिला कर चलते हुए कम्पनी स्थापित क्षमता बढ़ाने के लिए 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर का अतिरिक्त निवेश करेगी जिससे रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। लियुगोंग का लक्ष्य इस साल के अंत तक हर दृष्टिकोण से पूर्ण निर्माण संयंत्र लगाने का है। अगले 2-3 वर्षों में कम्पनी के कार्मिकों की संख्या 40 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। भारत में मानव संसाधन विकास के इस प्रयास से स्किल इंडिया मिशन का लक्ष्य भी पूरा होगा।

कंस्ट्रक्शन इक्वीपमेंट सेक्टर में आज लियुगोंग इंडिया की गिनती बाजार के दिग्गजों में होती है और भारत में इसके कारोबार के 15 वर्ष पूरे होने को हैं। व्हील लोडर में मार्केट लीडर लियुगोंग इंडिया के ट्रैक्ड एक्सकेवेटर और कम्पैक्शन इक्वीपमेंट लांच के साथ बाजार में कम्पनी की पकड़ और मजबूत हो गई है। सड़क निर्माण और खनन (माइनिंग) उद्योग की सभी जरूरतों को एक साथ पूरी करने में सक्षम इस कम्पनी का नाम तेजी से उभर रहा है। इसके डीलर पेशाकुशल और बहुत सफल रहे हैं और लियुगोंग के पूरे भारत में 50 से अधिक संपर्क केंद्र हैं।

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में 311 नए पैकेज शामिल

उदयपुर। राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग एवं न्यू इण्डिया एश्योरेंस कम्पनी के बीच आगामी दो वर्षों के लिए अनुबंध किया गया है। इसके साथ-साथ 311 नए हैल्थ पैकेज भी शामिल किए गए हैं। जयपुर के स्वास्थ्य भवन में प्रमुख शासन सचिव श्रीमती वीनू गुप्ता की उपस्थिति में स्टेट हैल्थ एश्योरेंस एजेंसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नवीन जैन एवं न्यू इण्डिया एश्योरेंस कम्पनी के क्षेत्रीय प्रबंधक संजय उप्पल ने आगामी दो वर्षों के लिए अनुबंध एमओयू पर हस्ताक्षर किए। श्री जैन ने बताया कि इस एमओयू के अनुसार प्रति परिवार प्रतिवर्ष 1263 रुपए की राशि के प्रीमियम का भुगतान किया जायेगा। प्रदेश में इस समय लगभग एक करोड़ परिवार बीएसबीवाई से लाभान्वित हो रहे हैं।

बालमन का प्रथम .....

(पृष्ठ एक का शेष)

महाराष्ट्र में आज भी विद्याध्ययन के शुभारंभ, अक्षराभ्यास का यह संस्कार बच्चे के स्कूल जाने से पहले बड़े शानदार रूप में मनाया जाता है। बच्चे की लिखने की कॉपी पर यहां की लोक-परंपरा में प्रतीक रूप में सरस्वती देवी का चित्र अंकित किया जाता है। पूजा में रखी पेंसिल या पेन से बच्चे का हाथ पकड़कर 'श्री' लिखवाया जाता है। पेड़ों का प्रसाद रहता है।

जैनधर्म मानने वालों में तो बच्चे के विद्याध्ययन के शुभारंभ की संरचना निराली ही कही जाएगी। यह संस्कार आज भी बच्चे के स्कूल जाने से पहले अखिल जैन समाज में होता है। इस अवसर पर बालक से पांच दीपक जलवाए जाते हैं, जो जैनधर्म में पांच ज्ञान के प्रतीक होते हैं- (1) श्रुति ज्ञान (2) मति ज्ञान (3) अवधी ज्ञान (4) मन पर्यव ज्ञान (5) कैवल्य ज्ञान।

बालक इन पांचों ज्ञानों के प्रतीक जलते दीपकों को प्रणाम करता है और घर के लोग उसे जीवन में ज्ञान की कभी अवहेलना न करने की सीख दे विदा करते हैं। आज जब शिक्षापद्धति गांव की पाठशाला की बेंत और छड़ी की मार, मूत्र निकालने वाली डिप्टी साहब के आने पर पड़ती मार और कड़े अनुशासन से मुक्त है। अब तो बच्चों पर बस्ते और होमवर्क का बोझ भी नहीं रहा ; न शिक्षक-विद्यार्थी में केवल डर और अनुशासन के सम्बंध ही रहे; स्कूल जाने का डर बच्चों के मन से चला गया है, फिर भी बच्चे के स्कूल जाने और पढ़ना-लिखना शुरू करने से पहले एक उत्सव का सा वातावरण निर्माण करने के लिए 'पट्टी पूजन' का संस्कार जरूरी है।

इस संस्कार से बड़ों के जैसी उसके भी हाथ में आई कलम पढ़ने-लिखे के साथ कुछ आड़ी-तिरछी रेखाओं से बनाने की उत्सुकता जाग्रत करती है। पेंसिल से कागज पर वह क्या-क्या नहीं बनाता?

घर के बड़ों के पेन-पेंसिल उठाना शुरू करने से पहले उसके हाथ में उसकी अपनी पेंसिल-पेन दे देना क्या अच्छा नहीं? मैंने तो कम अन्तर के छोटे बच्चे को बड़े के साथ अपनी भी 'पट्टी पूजन' कराने की जिद्द करते देखा है। 'पट्टी पूजन' से वर्णमाला, मराठी में जिसे 'उजवणी' कहते हैं, अक्षरों के चित्रों के साथ बालक के मन में बस जाती है।

365 फुट ऊंचे सर्वोच्च शिखर वाले भव्य मन्दिर की अभूतपूर्व प्रतिष्ठा 11 फरवरी 2019 को

उदयपुर। श्रीपार्श्व पद्मावती सेवा ट्रस्ट द्वारा तमिलनाडु के कृष्णागिरी में विश्व के प्रथम अद्भुत 365 फुट ऊंचे सर्वोच्च शिखर वाले भव्य मन्दिर की 11 फरवरी 2019 को अभूतपूर्व प्रतिष्ठा की जायेगी। इससे पूर्व 3 से 10 फरवरी 2019 तक संस्कार प्रतिष्ठा सेमिनार का विशेष आयोजन किया जाएगा जिसमें देश विदेश के लाखों लोगों के भाग लेने की संभावना है। यह जानकारी प्रेसवार्ता में परम पूज्य राष्ट्रसंत यतिवर्य डॉ. वसंत विजयजी महाराजश्री ने दी। प्रेसवार्ता में देवेन्द्र मेहता, मुकेश चेलावत, स्नेहल चेलावत भी उपस्थित थे।

डॉ. वसंत विजयजी बताया कि सहस्त्रफणा भगवान शक्ति पार्श्वनाथ का एक करोड़ काँच के टुकड़ों की नक्काशी से निर्मित्त भव्य मन्दिर, अद्भुत भव्यता के कारण गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान पा चुका है। इसी मन्दिर मण्डप में माँ पद्मावती के 23 मनभावन विभिन्न रूपों की प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। माँ पद्मावती की अनुपम सहस्त्रभुजा प्रतिमा को विश्व कीर्तिमान प्रदान कर विश्व गौरवान्वित हुआ है। 23 एकड़ में फैला हुआ यह शक्तिपीठ परिसर तमिलनाडु का एक प्रमुख पवित्र दर्शनीय स्थल बन चुका है जहाँ हजारों श्रद्धालु नियिमत रूप से आकर प्रेम, शान्ति और आत्मिक प्रसन्नता का दिव्य अनुभव करते हैं।

डॉ. श्री वसंत विजयजी ने बताया कि इस अद्भुत एवं अद्वितीय प्रतिष्ठा की विशिष्टताओं से भक्तजनों को लाभान्वित एवं परिचित कराने के लिए विशेष धर्म रथयात्रा प्रारम्भ की जा रही है। इस विशिष्ट रथ में प्रभु पाश्वर्नाथ की 51 इंच की अनुपम प्रतिमा होंगी। यह प्रतिमा एक सुन्दर कलश के ऊपर स्थापित की जाएगी। इस कलश में देश भर के 108 पार्श्वनाथ तीर्थों से मंगायी गई दिव्य वासक्षेप रहेगी। यह रथ, 325 दिनों में देश भर के 250 से अधिक शहरों एवं गाँवों में जाएगा।

उन्होंने बताया कि कृष्णागिरी में विश्व के सर्वप्रथम 365 फुट ऊँचे तथा 415 फुट चौड़े भव्य देवालय का निमार्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस भव्य देवालय में 51 फुट ऊँचे अशोक वृक्ष के नीचे प्रभु पार्श्वनाथ की 23-23 फुट ऊँची चहुंमुखी विशाल चार प्रतिमाएं, चारों दिशाओं की ओर प्रतिष्ठित होंगी। प्रतिमाओं के दोनों ओर सेवा में 17-17 फुट के आठ देवों की सुन्दर प्रतिमाएं, अष्ट प्रतिहार्यों से युक्त समवसरण का मनोहारी दृश्य भक्तजनों को आत्म शांति प्रदान करेगा।

उन्होंने बताया कि जिनालय में 9-9 फिट के चन्द्रप्रभु स्वामी, मुनि सुव्रत स्वामी, मणिभद्र वीर, कुबेर देव एवं 7-7 फिट के बटुक भैरव देव, महालक्ष्मी, सरस्वती, चन्द्रप्रभ यक्ष, पंच अंगुलीदेव की भव्य प्रतिष्ठा की जायेगी। इनके साथ ही 100 एकड़ के विशाल परिक्षेत्र में नगरियों का निर्माण किया जाएगा एवं विशाल सुविधायुक्त भोजन मंडप बनाया जाएगा। चार विशाल सभा मंडपों का वृहद निर्माण भी किया जाएगा जो बालक, युवा, वरिष्ठजन तथा गृहलक्ष्मी मंडप नाम से सुशोभित होंगे। इनमें प्रत्येक मंडप में 50 हजार श्रावक-श्राविकाओं के बैठने की सुव्यवस्था होगी।

उल्लेखनीय है कि प्रभु पाश्वर्नाथ की प्रत्येक प्रतिमा अखंड पत्थर से बन रही है। प्रतिमाओं के लिए डॉ. श्री वसंत विजयजी ने 15 वर्षों तक अथक प्रयासों ये राजस्थान से श्वेत, पीले, हरे एवं काले रंग के अखंड पत्थरों की खोज की। ये प्रतिमाएं विश्व की विशालतम प्रतिमाओं में होंगी ताकि आने वाले दर्शनार्थी यहाँ पूर्व, वर्तमान और भविष्य में आने वाली चौबीसी के दर्शनों का लाभ एक ही स्थान पर ले सकें।

संपूर्ण विश्व में डॉ. श्री वसंत विजयजी ने 147 से अधिक शान्ति केन्द्रों की स्थापना की। उनका मानना है कि जब तक मनुष्य के अंतर्मन में शान्ति नहीं होगी तब तक बाह्य जगत की शान्ति की बात करना निरथर्क है। अंतर्मन की शान्ति के लिए सही शिक्षा, सही मागर्दशर्न की आवश्यकता है। बालक, युवा, पौढ़ तथा महिलाओं प्रत्येक वर्ग की समस्या अलग-अलग है अत: आज सभी को उनकी समस्याओं के अनुरूप समाधान और मार्गदर्शन की जरूरत है तभी इनके अंतर्द्वन्द्व समाप्त होंगे और आन्तरिक शान्ति की ओर बढ़ सकेंगे।

एसएमआई का आइपीओ

उदयपुर। इन्वेंचर मर्चेंट बैंकर सर्विसेज प्रा.लि. पूंजी बाजार में कदम रखा। कंपनी ने रजिस्ट्रार ऑफ कंपनी, मुंबई, महाराष्ट्र के पास मुंबई स्थित कंपनी एमआरसी एग्जिम लि. का प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया जिसे 29 नवंबर को मंजूरी दे दी गई थी।

एमआरसी एग्जिम लि. के एमडी कीर्तिकुमार शाह ने कहा कि हम बाजार में मौजूद हर अवसर का लाभ उठाने के लिए तत्पर रहते हैं और हमारे मौजूदा व्यावसाय एवं उत्पाद पोर्टफोलियो को विकसित करने एवं उसे बेहतर बनाने के लिए काम करते हैं। हम फिलहाल फैब्रिकेशन एवं विनिर्माण उद्योग के हमारे कॉर्पोरेट एवं अन्य ग्राहकों को सेवायें दे रहे हैं। बीएसई एसएमई प्लेटफॉर्म के जरिये देशव्यापी उपस्थिति के साथ, हम दूसरे गैर-सूचीबद्ध समकक्षों से प्रतिस्पर्धी धार हासिल करेंगे। इस तरह उद्योग में अपनी एक सशक्त साख बनायेंगे। एमआरसी एग्जिम विभिन्न औद्योगिक, धातु और एलॉय उत्पादों की ट्रेडिंग के व्यावसाय में संलग्न कंपनी है। इसमें लौह एवं स्टील भी शामिल हैं। यह एक बहु-उत्पाद ट्रेडिंग कंपनी है जिसके पास विविधीकृत उत्पाद पोर्टफोलियो है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2016 की पिछली तिमाही से ट्रेडिंग व्यवसाय आरंभ किया था।

कौशल प्रशिक्षण को स्कूली शिक्षा में शामिल करना है जरूरी

उदयपुर। इण्डिया सेंटर फाउन्डेशन द्वारा आयोजित ग्लोबल पार्टनरशिप समिट 2017 में एक विशेष पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा का विषय था 'क्या शिक्षण एवं कौशल की मौजूदा प्रथाएं बड़ी संख्या में लोगों को सशक्त बनाकर विश्वस्तरीय मांगों को पूरा कर सकती हैं।'

पैनल की शुरूआत करते हुए कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के संयुक्त सचिव एवं सीवीओ राजेश अग्रवाल ने कहा कि भारत एक युवा देश है, जिसके नागरिकों की औसत उम्र 29 वर्ष है। कौशल प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण है।

देश की आबादी को इस तरह कौशल प्रदान किया जाना चाहिए कि वह सकल घरेलू उत्पाद एवं आर्थिक विकास में योगदान दे सके। कई देशों ने अप्रवास संबंधी नीतियां बनाई हैं और हम भारतीय प्रमाणपत्र मानकों को विश्वस्तर के समकक्ष लाना चाहते हैं। अगर एक मजदूर काम की तलाश में सिंगापुर जाता है तो उसके पास इस बात का प्रमाणपत्र होना चाहिए।

भारत के जनसांख्यिकी लाभांश का लाभ उठाने के लिए हमें अपने युवाओं को कौशल में सक्षम बनाना होगा, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम इसी दिशा में प्रयासरत है। उद्योग जगत को प्रशिक्षण एवं कौशल की आवश्यकता को समझना होगा। उद्योग जगत को कम श्रम लागत की मानसिकता बदलकर उच्च उत्पादकता की ओर रुख करना होगा।

पैनल पर चर्चा करने वाले सभी दिग्गजों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें इस बात का इंतज़ार नहीं करना है कि छात्र स्कूल या कॉलेज छोड़कर कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करें, इसके बजाए कौशल प्रशिक्षण उनकी स्कूली शिक्षा का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। हमें प्रशिक्षकों को भी प्रशिक्षित करना होगा।

कौशल विकास प्रमाणीकरण पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण द्वारा ही मौजूदा परिवेश में बदलाव लाया जा सकता है। सरकार ने ऐसे कई अभियान शुरू किए हैं जिनके माध्यम से छात्र कौशल प्राप्त कर उस पाठ्यक्रम में प्रमाणपत्र भी हासिल कर सकते हैं। भारत इसके लिए जर्मनी, यूके, यूएसए सहित कई देशों के साथ मिलकर काम कर रहा है।

शिल्पग्राम उत्सव में 21 राज्यों के कलाकार भाग लेंगे
- राज्यपाल करेंगे उद्घाटन -

उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 21 से 30 दिसम्बर तक राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं लोककला उत्सव 'शिल्पग्राम उत्सव' आयोजित किया जाएगा। इसमें 18 राज्यों के 600 लोक कलाकार व 21 राज्यों के 400 शिल्पकार भाग लेंगे। उत्सव का उद्घाटन राज्यपाल कल्याण सिंह द्वारा किया जायेगा।

केन्द्र निदेशक फुरकान ख़ान ने प्रेसवार्ता में बताया कि शिल्पग्राम उत्सव भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय, विकास आयुक्त हस्तशिल्प, हथकरघा, राष्ट्रीय पटसन बोर्ड तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के सहयोग से आयोजित है जिसमें विभिन्न राज्यों के एक हजार से अधिक लोक कलाकार एवं शिल्पकार तथा व्यंजन शिल्पी भाग लेंगे। उत्सव में प्रतिदिन दोपहर 12 बजे हाट बाजार, दोपहर 2 से 4 बजे तक बंजारा रंगमंच पर विविध कला-प्रदर्शन तथा सायं 6 बजे मुक्ताकाशी रंगमंच 'कलांगन' पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

उत्सव में पश्चिम बंगाल का नटुआ, असम का भोरताल, उत्तरप्रदेश का डेडिया, कर्नाटक का पूजा कुनीथा, सिक्किम का चांडी व पुद्दुचेरी के वीर वीरई नटनम् जैसी कलाशैलियां पहली बार प्रस्तुत होंगी। उन्होंने बताया कि हाट बाजार में आंध्रप्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, बिहार, दिल्ली, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, जम्मू व कश्मीर, मध्यप्रदेश, ऑडीशा, पुद्दुचेरी, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पश्चिम बंगाल, गोवा तथा देश के पूर्वोत्तर राज्यों शिल्पकारों की बनाई कलात्मक वस्तुएँ खरीदने का मौका मिलेगा।

खिलाड़ी बंशीलाल को 'कोमल दा स्मृति' पुरस्कार

लोककला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये कुचामणी ख्याल के कलाकार बंशीलाल खिलाड़ी को माननीय राज्यपाल द्वारा कोमल दा स्मृति प्रथम लाइपु टाइम अचीवमेंट पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि दो लाख इक्यावन हजार का यह पुरस्कार 21 दिसम्बर को दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि नागौर जिले के डेगाना के चुई गांव के खिलाड़ी बंशीलाल पिछले तीन दशकों से कुचामणी ख्याल कर रहे हैं। देश के विभिन्न समारोहों में उन्होंने अभिनय की विशिष्ट छाप छोड़ी है। शिल्पग्राम उत्सव में 21, 22 व 23 दिसम्बर को अपने दल सहित कुचामणी ख्याल का प्रदर्शन भी करेंगे।

अरविन्दसिंह मेवाड़ द्वारा वार्षिक कैलेण्डर का लोकार्पण

उदयपुर। एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर के चेयरमेन एवं महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ ने सिटी पैलेस के वार्षिक कैलेण्डर 'उदयपुर मेवाड़ की बहुवल्लभा बावड़ियां एवं कलात्मक कुण्ड' 2018 तथा विक्रम संवत 2075 के श्री मेवाड़ विजय पंचाग का लोकार्पण किया।

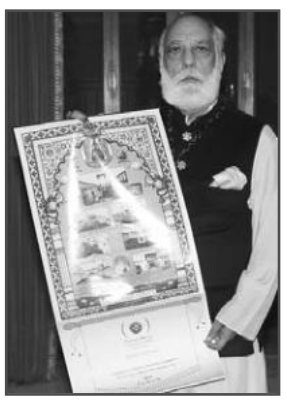

महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट के प्रबंधक गिरिराजसिंह ने बताया कि वर्ष 2018 के वार्षिक पैलेस कैलेण्डर के प्रथम पृष्ठ पर श्री एकलिंगनाथजी, वरदायक महर्षि हारीत राशि, तोरण बावड़ी, सुंदर बावड़ी, ओझा बावड़ी, महासतियां कुण्ड, गंगोद्भव कुण्ड, नवलखा बावड़ी, राज राजेश्वर बावड़ी के रंगीन चित्र प्रकाशित गए है। इस कैलेण्डर के अंत में मेवाड़ की त्रिमुखी बावड़ी, बेड़वास बावड़ी, भुवाणा की बावड़ी, कर्ण बाव व सर्वऋतु विलास की बावड़ी, गोगुंदा की बावड़ी, कल्याणरायजी की बावड़ी, सत्यनारायणजी की बावड़ी, चंपाबाग की बावड़ी, अंबामाताजी की बावड़ी, आयड़ की बावड़ी, साण्डेश्वर महादेवजी की बावडी, भाणा गणेशजी की बावड़ी, हरवेनजी की बावड़ी, भैरव बावड़ी, मांझी की बावड़ी आदि के साथ ही जावर का रमानाथ कुण्ड, एकलिंगजी के धारेश्वर कुण्ड, आम्बादरख कुण्ड, गणेश कुण्ड, तक्षक कुण्ड, चक्र कुण्ड, तुलसी कुण्ड, चित्तौड़ का सुप्रसिद्ध गौमुख कुण्ड के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। कैलेण्डर के बारह महीनों के पृष्ठ पर कविवर पंडित नरेन्द्रजी मिश्र की ओजस्वी कविताओं को भी प्रकाशित किया गया है। गिरिराज सिंह ने बताया कि कैलेण्डर में प्रकाशित चित्र एवं आलेख के विषयवस्तु के लिए भविष्यपुराण, गुणकीर्ति प्रकाश, राजवल्लभ वास्तु शास्त्रम्, विश्व वल्लभ, अमरकोष, अपराजितपृच्छा, वीर विनोद, उदयपुर राज का इतिहास से संदर्भ लिया गया है।

प्रतिभा के आकाश पर झिलमिलाए दिव्यांग इंद्रधनुषी सितारे
'दिव्यांग फैशन और टेलैंट शो' का आयोजन

उदयपुर। किसी प्रतिभागी के दोनों हाथ नहीं थे तो किसी के दोनों पांव, लेकिन एक बात सब में सामान्य थी- पूरे उत्साह और जज्बे से अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन कर जीवन में हार नहीं मानने और हौंसलों की उड़ान से कामयाबी का आकाश माप लेने का दृढ़ संकल्प। यह नजारा था सुखाड़िया रंगमंच पर नारायण सेवा संस्थान की ओर से विश्व दिव्यांगता दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित 'दिव्य-2017' दिव्यांग फैशन एण्ड टेलेंट शो का।

इसमें उदयपुर सहित देश के विभिन्न राज्यों के उन प्रतिभाशाली दिव्यांग युवक-युवतियों ने भाग लिया, जिनमें से अधिकांश के पोलियो करेक्शन के ऑपरेशन संस्थान में हुए और उन्होंने स्वरोजगार के लिए मोबाइल सुधार, सिलाई एवं डिजाइनिंग, मेहंदी, कम्प्युटर, हाउस कीपिंग आदि प्रशिक्षण प्राप्त किए। इस आयोजन में उन दिव्यांगों ने भी अपनी प्रस्तुति से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया जिनके संस्थान में ही मोड्यूलर कृत्रिम अंग लगाए गए थे।

उदयपुर में पहली बार आयोजित इस अनूठे आयोजन का उद्घाटन मुख्य अतिथि विश्व पैरालिम्पिक एथलीट स्पर्द्धा के स्वर्ण पदक विजेता एवं राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार से अलंकृत एथलीट देवेन्द्र झाझरिया व संस्थान के संस्थापक चेयरमैन कैलाश 'मानव' ने किया।

विशिष्ट अतिथि यूआईटी अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, देवस्थान विभाग के उपायुक्त दिनेश कोठारी, डॉ आनन्द गुप्ता, एयरपोर्ट के स्टेट कमान्डेंट राहुल वर्मा, डॉ यशवंत कोठारी थे। झाझरिया का संस्थान की ओर से पाग, शॉल, प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह से अभिनन्दन किया गया।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि दिव्यांगजन में प्रतिभा और कौशल की कमी नहीं है। यह बात उनमें ऑपरेशन के लिए संस्थान में आने के दौरान देखी गई और महसूस किया गया कि इन्हें प्रतीक्षा है तो केवल प्रोत्साहन, उचित अवसर और मंच की। संस्थान ने इसे उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया और यह इंद्रधनुषी कार्यक्रम आयोजित कर दिव्यांगजन का हौंसला बढ़ाया।

संस्थान संस्थापक कैलाश ''मानव'' ने कहा कि संस्थान के सभी प्रकल्प सेवा संवेदना, सहयोग और संद्भाव से प्रेरित हैं। दिव्यांगजन समाज की थाती हैं। इन्हें आशावादी क्षितिज देना हम सबका दायित्व है। इनके लिये महत्वपूर्ण हैं-प्यार और आत्मसम्मान। निदेशक वंदना अग्रवाल ने संस्थान की 32 वर्षीय सेवा यात्रा और विदेशों में पोलियो करेक्टिव संर्जरी के शिविरों की जानकारी दी।

रीढ़ की हड्डी का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने उदयपुर क्षेत्र की पहली दूरबीन विधि द्वारा रीढ़ की हड्डी का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर क्षेत्र की पहली दूरबीन विधि द्वारा रीढ़ की हड्डी (डिस्क सर्जरी) का सफल ऑपरेशन डॉ. अनुराग पटेरिया एवं उनकी टीम द्वारा किया गया। डॉ. अनुराग ने बताया कि यह स्पाइन सर्जरी की विधि है जो देश के गिने-चुने बड़े अस्पतालों में ही उपलब्ध है। अभी तक इस सर्जरी के लिए मरीजों को दिल्ली, मुम्बई जाना पड़ता था। अब यह सुविधा पीआईएमएस, उमरड़ा में आने वाले मरीजों को नियमित दी जा सकेगी।

डॉ. अनुराग ने बताया कि इस विधि से ऑपरेशन के बाद मरीज को उसी दिन या अगले दिन डिस्चार्ज किया जा सकता है। ऑपरेशन का चीरा सामान्य सर्जरी से बहुत छोटा होता है जिससे दर्द बहुत कम होता है। इस ऑपरेशन में रीढ़ की हड्डी का कोई भी हिस्सा काटा नहीं जाता जिस कारण रीढ़ की हड्डी कमजोर नहीं होती। ऑपरेशन के दौरान इंफेक्शन का खतरा न के बराबर और रक्त स्त्राव न के बराबर होता है।

राज्य स्तरीय न्यूटंस सांइस ओलम्पियाड के पोस्टर का विमोचन

उदयपुर। न्यूटंस सेवा संस्थान द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राज्य स्तरीय न्यूटंस सांइस ओलम्पियाड का आयोजन किया जा रहा है। इसके पोस्टर का विमोचन उच्चशिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा तथा राजसमंद जिला कलेक्टर पी. सी. बैरवाल ने किया।

शुक्रवार को आयोजित प्रेसवार्ता में न्यूटंस सेवा संस्थान के अध्यक्ष विपुल गेंदर ने बताया कि ओलम्पियाड 1 जनवरी से 25 फरवरी तब आयोजित किया जायेगा। ओलम्पियाड में राज्य स्तरीय प्रथम विजेता को 21 हजार, द्वितीय को 11 हजार तथा तृतीय को 5 हजार की नकद राशि प्रदान की जायेगी। इसी प्रकार राज्य स्तर पर श्रेष्ठ प्रधानाचार्य एवं शिक्षक को भी नकद 11 हजार व 5 हजार रूपये प्रदान किये जायेंगे। ओलम्पियाड में चयनित 100 छात्रों को 50 लाख रूपये की विशेष स्कालरशिप आईआईटी-नीट की तैयारी के लिए प्रदान की जायेगी। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के उद्देश्य के अंतर्गत 50 बालिकाओं को बिटिया स्कालरशिप के माध्यम से एक-एक हजार की सहयोग राशि प्रदान की जायेगी। प्रतियोगिता में 8वीं से 12वीं विज्ञान वर्ग के छात्र भाग ले सकेंगे आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।